कोंपल

त्रैमासिक
मूल्य : 20 रुपए
जुलाई-सितम्बर 2015

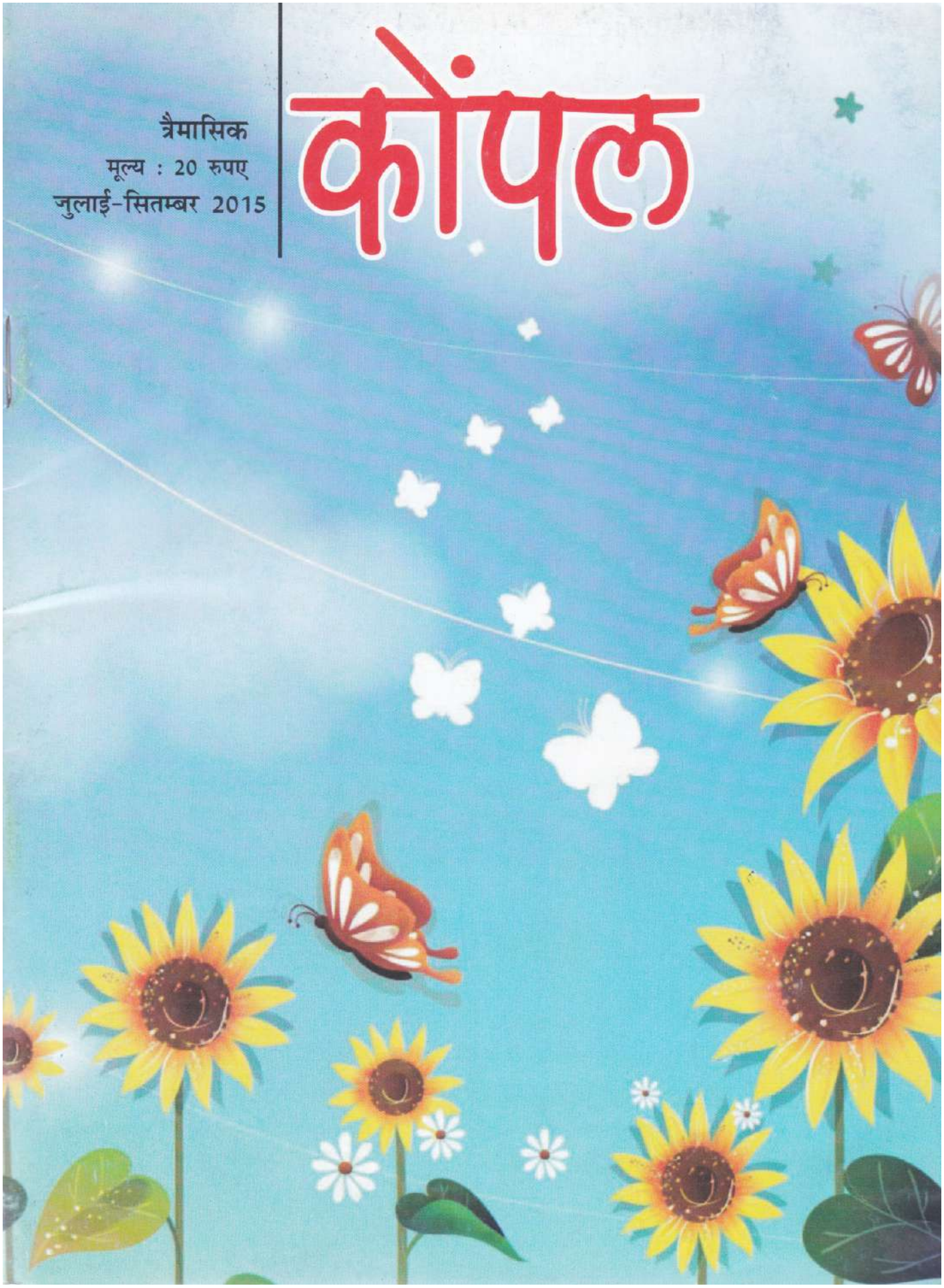

जुलाई–अगस्त–सितम्बर की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 जुलाई (1906)

महान क्रान्तिकारी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के कमाण्डर अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्मदिवस।

23 जुलाई (1802)

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, 'थ्री मस्कीटियर्स', 'काउण्ट ऑफ माण्टे क्रिस्टो', 'आपल हरे' जैसे उपन्यासों के रचयिता अलेक्जेंडर इ्यूमा का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1880)

महान कथाकार, भारतीय जनता के दुख-दर्द, आशाओं और सपनों को अपनी कलम के माध्यम से सामने लाने वाले कलम के सिपाही प्रेमचन्द का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1940)

शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस। अंग्रेजों द्वारा 1919 में जलियांवाला बाग में आम निहत्थी जनता पर बर्बर हत्याकाण्ड के प्रत्यक्षदर्शी बालक ऊधमसिंह ने हत्यारों को सजा देने का संकल्प बाँध था। देश की बेगुनाह जनता पर गोलियाँ चलवाई थीं जनरल डायर ने। ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड जाकर लगभग 20 वर्षों बाद हत्यारे से बदला लिया। भेष बदले ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड के कैंग्स्टन हाल में भरी सभा में सर माइकल ओडवायर को गोलियों से भून दिया। ऊधमसिंह गिरफ्तार हो गये और अंग्रेज जालिमों ने इसी दिन उन्हें फाँसी की सजा दे दी।

6 अगस्त (1945)

हिरोशिमा दिवस। मानवता के इतिहास में एक काला दिन। इसी दिन अमरीका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला अणु बम गिराया जिसमें लाखों लोग मारे गये, पूरा शहर तबाह हो गया, कई पीढ़ियों तक बच्चे विकलांग पैदा होते रहे। तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर ऐसा ही बम गिराया गया।

9 अगस्त (1942)

अगस्त क्रान्ति दिवस। सारा कांग्रेसी नेतृत्व गिरफ्तार था। पर नौजवानों के नेतृत्व में जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी। बच्चे-बच्चे की जुबान पर था–'अंग्रेजों भारत छोड़ो!' ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें काँप गईं। देश के कई हिस्सों में हफ्तों तक ब्रिटिश शासन को उखाड़कर आज़ाद सरकार कायम रही।

11 अगस्त (1908)

खुदीराम बोस का शहादत दिवस। बंगाल के इस युवा क्रान्तिकारी को ब्रिटिश साम्राज्यवादी हुकूमत ने फाँसी की सजा दे दी थी। इस बहादुर इंक़लाबी की उम्र उस वक़्त महज 19 वर्ष की थी। आज़ादी के दीवाने खुदीराम बोस ने हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया।

15 अगस्त (1947)

स्वतंत्रता दिवस। हज़ारों-हज़ार लोगों की कुर्बानियों और जनता के लम्बे संघर्ष के बाद इसी दिन देश को आज़ादी मिली। लेकिन यह आज़ादी अधूरी है। सच्ची आज़ादी तब मिलेगी जब सबको शिक्षा, रोजगार और बराबरी का दर्जा मिलेगा।

24 अगस्त (1908)

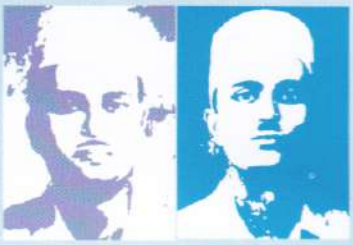

शहीदे आज़म भगतसिंह के अनन्य सहयोगी, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु (राजगुरु के नाम से विख्यात) का जन्म पूना (महाराष्ट्र) के खेड़ा (वर्तमान में राजगुरु नगर) में हुआ था।

28 अगस्त (1828)

महान रूसी उपन्यासकार, 'युद्ध और शान्ति', 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे विख्यात उपन्यासों के रचयिता लेव तोलस्तोय का जन्मदिवस।

29 अगस्त (1979)

प्रसिद्ध बांग्ला क्रान्तिकारी कवि नज़रूल इस्लाम की पुण्यतिथि।

13 सितम्बर (1930)

यतीन्द्रनाथ दास का शहादत दिवस। ब्रिटिश हुकूमत की जेल में राजनीतिक बन्दियों के अधिकारों के लिए अनशन करते हुए सरकार पर दबाव डालने के लिए पानी पीना तक छोड़ दिया। 63 दिन के अनशन के बाद यतीन्द्र ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

16 सितम्बर (1904)

क्रान्तिकारी वीर सपूत शहीद महावीर सिंह का जन्म एटा जिला (उत्तर प्रदेश) के शाहपुर टहला में हुआ था।

25 सितम्बर (1881)

चीन के महान लेखक लू शुन का जन्मदिवस।

28 सितम्बर (1907)

शहीदे आज़म भगतसिंह का जन्मदिवस।

कोंपल

त्रैमासिक, वर्ष २, अंक ३
जुलाई-सितम्बर २०१५

संस्थापक
(स्व.) कमला पाण्डेय
सम्पादक
गीतिका
सज्जा
रामबाबू

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : 0522-2786782

इस अंक का मूल्य : 20 रुपये
वार्षिक सदस्यता : 100 रुपये
(डाक व्यय सहित)
आजीवन सदस्यता : 2000 रुपये

स्वत्वाधिकारी अनुराग ट्रस्ट के लिए गीतिका द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा लक्ष्मी ऑफसेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ से मुद्रित।
सम्पादन एवं प्रकाशन पूर्णत: स्वैच्छिक तथा अवैतनिक

इस अंक में

हमारी बात/तुम्हारी बात 4

कहानियाँ

भोंबोल सरदार - खगेन्द्रनाथ मित्र 5
मरता क्या न करता - उजबेक लोक कथा 16
पापा ने अपनी ताकत आजमाई
- अलेक्सान्द्र रस्किन 23
वफादार हाथी - जापानी कथा 34

कविता

सतपुड़ा के घने जंगल - भवानी प्रसाद मिश्र 21

जानकारी

एक अनगिनत सदस्योंवाला परिवार 24

विज्ञान

कॉसमॉस - कार्ल सागान 12
मोहन जादूगर कैसे बना 26

इतिहास के पन्नों से

हिरोशिमा और नागासाकी जब जल उठा 31

शहीदों की स्मृति

यतीन्द्र नाथ दास 9

शख़्सियत

अलेक्जेण्डर ड्यूमा और दी थ्री मस्केटियर्स 39

फिल्म कोना

गोपी गवैया बाघा बजैया 42
कार्टून 48
चित्र कैसे बनायें 49
चित्र कथा 50

हमारी बात

प्यारे बच्चो,

फिलिस्तीन एक छोटा सा देश है, जो अपनी आज़ादी के लिए लड़ रहा है। इजराइल उसे पूरी तरह ख़त्म कर देना चाहता है, उसके भारी भूभाग को उसने हड़प लिया है और अब पट्टी के आकार वाले बचे क्षेत्रफल पर भी, जिसे गाजापट्टी के नाम से जाना जाता है वह कब्जा जमाना चाहता है। इसके लिए उसने युद्ध छेड़ रखा है। अब तक लाखों फिलिस्तिनियों को मारा जा चुका है। उनमें सैकड़ों की संख्या में तुम्हारे जैसे छोटे बच्चे भी बड़ी बेरहमी से मार दिये गये। कई बच्चे तो इतने नन्हें थे कि अपनी मांओं के गोद में ही उन्होंने दम तोड़ दिया। कईयों ने अपना घर अपना पूरा परिवार खो दिया। लेकिन फिलिस्तीन और उसके लोगों ने हार नहीं मानी। इजराइल ही नहीं दुनियाभर में जब भी मारकाट मची मासूम बच्चों को हमेशा ही इसकी कीमत चुकानी पड़ी है। कभी ऐसी ही लड़ाई में हिरोशिमा नागासाकी के बच्चे मारे गये थे तो कभी वियतनामी बच्चे मौत के मुंह में धकेल दिये गये थे, जब अमेरिका ने इन जगहों पर बम गिराया था। आज फिलिस्तीन अपने बच्चों को मौत के मुंह में जाते देख रहा है। क्या तुम इन फिलिस्तीनी बच्चों और उनके मां-बाप के तकलीफ और संकट की घड़ी में शामिल नहीं होगे .

– तुम्हारी दीदी

तुम्हारी बात

वह रात जब पलंग गिर पड़ा बड़ी मजेदार कहानी है। कोंपल में ऐसी ही और भी कहानियां दें.– **हिमांशु कटियार,पीलीभीत**

मुझे कॉसमॉस की कहानी इतनी पसन्द आई कि मैं पिछले किश्तों को भी पढ़ गया। मेरे दोस्त के बड़े भाई ने इसे पढ़ने के लिए मुझे दिया था। उनके घर यह पत्रिका आती है। उनके घर में पूरी एक लाइब्रेरी है। मैं भी किताबों की एक वैसी ही लाइब्रेरी बनाना चाहता हूं। कौन सी किताबें मंगाऊ। क्या आप अच्छी किताबों के बारे में हमें बता सकते हैं - **राहुल चौबे, उधमसिंह नगर**

इस अंक की सभी कविताएं बढ़िया थीं। हमने अपने क्लास में खूब जोर-जोर से बोलकर उसे पढ़ा। इस बार स्कूल में होनेवाले प्रोग्राम में हम अपनी क्लास की तरफ से इन्हीं कविताओं का पाठ करेंगे

-पिंकी चौहान

भोंबोल सरदार

(सातवीं किश्त)

शालुकडांगा से मानिकपुर

खगेन्द्र नाथ मित्र

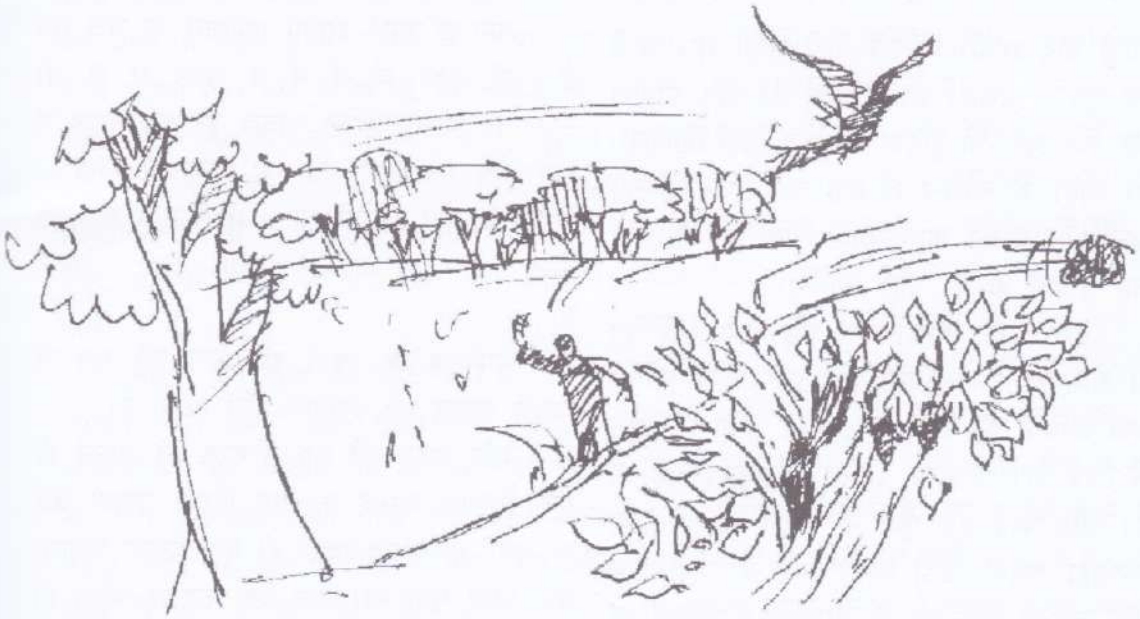

शालुकडांगा से मानिकपुर, पक्के दो कोस का रास्ता। बीच वाले रास्ते के दोनों तरफ धान और पटुआ के खेत। भोंबोल देखते हुए चलता जा रहा है। पटुए को पौधों के ऊपर पतंगे के झुंड मँडरा रहे हैं। एक छोटी-सी चिड़िया एक पटुए की फुनगी पर आ बैठी। कोमल फुनगी उस छोटी-सी चिड़िया के भार से झुक गयी। चिड़िया उड़ी नहीं, हवा में पटुए के पौधे के साथ झूलने लगी। भोंबोल ने सड़क से एक ढेला उठाकर चिड़िया की तरफ फेंका। चिड़िया फुर्र से उड़ गयी।

सुबह से ही भोंबोल का मन बहुत उदास था। सचमुच बुढ़िया बहुत अच्छी थी। उसे सबसे ज्यादा दुख तब हुआ जब उसे दूध की

साढ़ी याद आयी। कितनी मोटी साढ़ी थी। अभी भी मुँह में उसका स्वाद ताजा है। यदि भोंबोल वहां रुक जाता तो बुढ़िया उसे रोज साढ़ी खिलाती। पर साढ़ी के लालच से क्या वह टाटानगर नहीं जायेगा? ढंग का काम-काज सीख लेने के बाद वह बुढ़िया के घर लौट आयेगा।

इधर सूरज काफी उपर चढ़ आया था। धूप से सारा बदन जल रहा था। पर मानिकपुर भी अब अधिक दूर नहीं। वे रहे पेड़ पौधों के आड़ में छिपे घर। गाँव के बाहर गाय-बछड़े चर रहे हैं। और चरते हुए पूँछ भी हिला रहे हैं। एक चरवाहा लड़का डंडा लेकर गाय के पीछे-पीछे दौड़ रहा है और मुंह से आवाज़े निकालता जा रहा है - ''पूर्र् हैं''। भोंबोल पैदल चलते हुए गाँव में दाखिल हुआ।

गाँव के शुरू में ही एक गृहस्थ का घर था। एक भिखारी उसके दरवाजे पर, कद्दू के मचान के किनारे खड़ा होकर गा रहा है-

''कब जाओगे हे गिरिराज
मेरी उमाधान को लाने हे
चाँद जैसा मुख़ड़ा न देखूं अब तो

गाने के साथ उसका एकतारा भी बज रहा है - बं, बंआ, बं, बं, बं, बं, बंआ, बं, बं, बं।

यह गाना भोंबोल जानता है। वह बगल में रखे नींबू पर ताल देते हुए गुनगुनाने लगा - ''कब जाओगे हे गिरिराज - मे - ए - ए - री - ई - ई - मा धन को - ला - आ - आ ने ए ...।

दुर्गापूजा के पहले इस गाने की धुन से पल्ली बंगाल का आकाश गूँज उठता है।

गाँव से गुजरते हुए भोंबोल को सामने ही एक विशाल बरगद का पेड़ दिखा, उसके जड़ के चारों ओर बहुत पहले ही एक पक्का चबूतरा बना दिया गया था। अब वह फटकर चौड़ा हो गया था और उसकी ईंटें निकल आयी थीं। पेड़ के फैले हुये मोटे-मोटे डालों से असंख्य जटाएँ चारो ओर साँप की तरह लटकी हुई थीं।

एक किनारे तालाब था और एक छोर पर शालुक का जंगल। तालाब जितना विशाल था उतना ही पुराना था। उसका पक्का घाट भी कबका टूट फूट चुका था। लड़के झुंड बनाकर तालाब में नहा रहे थे। खूब मस्ती में थे वे। बरगद की जटाओं से झूला झूलते हुए वे तालाब में कूद

पड़ते और फिर तैरकर जटा को पकड़ झूलने लग जाते।

भोंबोल के मन में आया कि वह भी एक डुबकी लगा ले। धूप से देह तप रही थी। लेकिन उसके पास तो और कपड़े हैं नहीं। खैर उससे क्या फर्क पड़ता? वह धोती के एक छोर को लपेटे हुए दूसरे छोर को सुखा लेगा।

बाँस की करछी और नींबू वह पेड़ के एक कोटर में छिपा आया। फिर कपड़े को समेटकर वह बरगद के पेड़ पर चढ़ गया। लड़के अचानक उसे देखकर भौंचक्के रह गये। यह कौन है रे? परन्तु भोंबोल ने इन लोगों की अनदेखी कर दी। वह डाल से होता हुआ तालाब के ऊपर तक चला आया। फिर एक लम्बी सी जटा पकड़ कर थोड़ा नीचे खिसक आया और तेजी से झूलने लगा - झूलते-झूलते उसने अचानक एक लम्बी छलांग लगाई। सीधे जाकर बीच तालाब में गिरा। गिरते ही वह पानी के नीचे गया और निकला नहीं।

लड़कों को लगा वह डूब गया। डर से वे चीखने लगे। ठीक उसी समय दस हाथ दूर भोंबोल का सिर दिखा। सोंस की तरह वह पानी के ऊपर आ गया। फिर नीचे गया, फिर ऊपर आया। फिर वह कुछ देर पीठ के बल तैरता और कुछ देर बाद करवट लेकर तैरने लगता।

लड़के तैरना भूल उसे देखने लगे। कोई कमर तक पानी में खड़े होकर तो कोई जटा से लटके रहकर उसे देखते रहे।

भोंबोल को खूब घमंड हो आया। वह समझ गया कि लड़के उसे देख रहे हैं। पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि उसके बराबरी में तैर कर दिखाए। उसने किसी से कोई बातचीत नहीं की। मुंह चढ़ाकर पानी से निकला और किनारे से चढ़कर जमीन पर आ गया। कपड़े का एक सिरा लपेटकर, दूसरे सिरे से बाहों और पूरी देह को पोंछकर सुखा लिया, फिर कपड़े को ऐंठ कर उसका पानी निचोड़ डाला। भूख के कारण उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे। इस समय भात-सब्जी की थाली नहीं होने से भी चलेगा। बस थोड़े से नमक के साथ भात मिल जाये। बस भात थाली भर होना चाहिए। पर इस समय उसे भात कौन देगा। चलो, नींबू ही खा लिया जाय!

वह कोटर की ओर बढ़ा। वह निश्चिन्त था कि उसका नींबू सुरक्षित है। पर जब वह हाथ डालकर टटोलता है तो वहां केवल करछी ही है, नींबू का कहां अता-पता नहीं। किसने लिया होगा? उसने फिर से टटोला। ना, नहीं है, तो! अच्छा मजाक है! इधर उधर निगाहें दौड़ाई। देखा कि एक लड़का नींबू लिये भाग रहा है। मेरा नींबू चुराया? तेरी यह हिम्मत! - भोंबोल ने चोर का पीछा किया। लड़के ठीक भाँप नहीं पाये कि क्या हो रहा है? उन्होंने देखा कि उन लोगों का दोस्त नेलो नींबू लेकर बेतहाशा दौड़ रहा है, और उसके पीछे वह नया लड़का भाग रहा है। लड़कों का हुजूम भी उनके पीछे दौड़ पड़ा।

दौड़ते हुये वे सभी तालाब पार कर गये। सामने लाहिड़ी लोगों का लक्ष्मीनारायण का मंदिर था। रास्ता उसके बगल से गुजरता हुआ जाता है। रास्ते के दूसरे किनारे झाड़-झंखार थे। सभी दौड़ते-दौड़ते मंदिर भी पार कर गये।

भोंबोल अब लड़के के करीब पहुँच चुका था। लड़के ने भी एक बार पीछे मुड़कर देखा। अब वह नहीं बच सकता । उसने नींबू को झाड़ी में फेंकना चाहा। इतने में ही भोंबोल ने उसकी बाँह पकड़ ली। दोनों हाँफ रहे थे। लड़के ने हाँफते हुये कहा - "छोड़ो मेरा हाथ"

भोंबोल ने एक झटके से उसके हाथ से नींबू छीन लिया और हाथ को कसकर झकझोरते हुए कहा - ''चोर! मेरा नींबू चुरा कर भागता है।''

उसकी भी सांस जोर जोर से चल रही थी। उसके मुँह से कोई और बात नहीं निकली पर गुस्से से उसकी बड़ी-बड़ी आँखें मानो बाहर निकली आ रही थीं।

अबतक पीछा करने वाले लड़के भी आ पहुँच थे। उन्होंने भोंबोल और उस लड़के को घेर लिया। सभी हाँफ रहे थे। एक ने पूछा - ''क्या हो रहा है? कौन हो तुम?''

भोंबोल ने जबाव देने की कोई ज़रूरत नहीं समझी। उसने फिर लड़के के हाथ को जोर से हिलाया और बोला - ''तूने क्यों मेरा नींबू चुराया?''

साथियों को निकट पाकर लड़के की हिम्मत लौट आयी थी। वह बोला - ''हाथ छोड़ो मेरा! नींबू तुम्हारा है?''

सभी ने एक साथ कहा - ''तुम्हारा नाम लिखा हुआ है उस पर? छोड़ दो उसे -''

भोंबोल ने कहा - जा भाग यहाँ से! किसी को नेतागिरी करने की जरूरत नहीं - एक थप्पड़ से -''

एक लड़का उसे चिढ़ायते हुए बोला - ''अरे बाप रे, कहाँ भागे? ओ हो! वह रहा चिंटी का बिल।'' फिर वह कहने लगा - ''अभी भी संभल जा - उसे छोड़ दे - नहीं तो -'' यह कहते हुए ही उसने भोंबोल को जोर से धक्का मारा।

भोंबोल ने भी उसी क्षण उसके गाल पर एक जोरदार तमाचा जड़ दिया। उसका गाल लाल हो उठा। लड़के जैसे पागल हो गये। भोंबोल पर चारों ओर से घूंसों और थप्पडों की बौछार होने लगी। किसे ने उसे नोच लिया, कोई उसका कपड़ा खींचने लगा। लड़कों से मार खाकर भोंबोल के गुस्से का कोई पारावार न रहा। उसका चेहरे ने रौद्र रूप धारण कर लिया। चाचा और स्कूल के शिक्षकों के अलावा आज तक किसी ने उसे मारने की हिम्मत नहीं की थी। अब इस गाँव के लड़कों का मार उसे हजम करना होगा! वह अंधों के तरह लात-घूंसा चलाने लगा। उसका घूंसा किसी के पेट में लगा - उसने किंकियाना शुरू कर दिया, लात किसी के पीठ पर पड़ा - धम्म-धम्म की आवाज हुई, कोई अपना नाक पकड़ कर बैठ गया, किसी के आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

कोई चारा न देखकर उनमें से एक ने कहा - ''अरे नेलो, जा घर से भाला लेकर आ। आज इसको बींध कर मारेंगे। जानता है सूअर - इस गाँव का नाम मानिकपुर है।''

सड़क पर बाँस का लट्ठा पड़ा हुआ था। भोंबोल ने उसे फुर्ती से उठा लिया और सिर के चारो ओर भाँजते हुए उसने ललकारा - ''उसके पहले मैं तुम लोगों के सिर चूर-चूर कर दूँगा - चल सामने आ सब के सब मानिकपुरवाले।''

पलभर में भीड़ पतली हो गयी। लड़के तितर-बितर हो गये। भोंबोल को लगा अब उसका भी यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा। जो भी हो आखिर लड़ाई तो उसने ही जीता है। वह लाठी को कंधे पर रखकर तेजी से आगे बढ़ने लगा। उसकी छाती और पीठ पर जलन हो रही थी। एक लड़के ने उसे कसकर नोंच लिया, खून निकल आया था।

(बंगला से अनुवाद : देवाशीष बराट)

यतीन्द्रनाथ दास के शहादत दिवस (13 सितम्बर) के अवसर पर

बच्चो, क्या तुम लोगों ने यतीन्द्रनाथ दास का नाम सुना है? यतीन्द्रनाथ दास एक महान क्रांतिकारी और शहीदे-आज़म भगतसिंह के अच्छे मित्र थे। उन्हे जतिन दास के नाम से भी जाना जाता है। जतिन दास का जन्म 1904 में कलकत्ता में हुआ। वे सोलह वर्ष की आयु में गाँधीजी द्वारा चलाये गए असहयोग आंदोलन में शामिल हुए और इस दौरान कई बार जेल भी गए। जब गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को रोक दिया तो उन्हें धक्का सा लगा। लेकिन उन्हें चुपचाप बैठ जाना गवारा न हुआ। वे हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ (एच आर ए) नाम के क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गए। बाद में भगतसिंह के प्रस्ताव पर वर्ष 1928 में हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ का नाम बदलकर हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ (एच एस आर ए) कर दिया गया। एच एस आर ए का लक्ष्य केवल ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ संघर्ष करना और अंग्रेजों की गुलामी से आजाद होना ही नहीं था बल्कि यह लड़ाई तब तक लड़ी जानी थी जब

तक देश सभी तरह की गुलामी से आजाद न हो जाये। अंग्रेज की जगह अगर कोई भारतीय भी देश की गद्दी सम्हालता तब भी देश के लोगों को पूरी आजादी नहीं मिल पाती क्यों कि जिन्दा रहने के लिए जो चीजें जरूरी थीं वह उन्हें नहीं मिलतीं। यानी सभी लोगों के लिए रोटी कपड़ा मकान। यह तभी मिल सकता था जब सब कुछ पूरी तरह बदल दिया जाता। कोई किसी को पैसे और पद की ताकत से दबाता नहीं। न कोई देश किसी देश को और न ही कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को।

जतिन दास भी एच एस आर ए के लक्ष्य से पूरी तरह सहमत थे। वे हर तरह के क्रांतिकारी कामों में हिस्सा लेते और पूरी लगन के साथ उसे पूरा करते। जिसके चलते अंग्रज़ों ने उन्हें खतरनाक मानकर 14 जून 1929 को गिरफ़्तार कर लिया और लाहौर षड्यन्त्र केस के सिलसिले में लाहौर की बोर्स्टल जेल में बंद कर दिया। उस वक्त जेलों में अंग्रेज़ कैदियों को तो सहूलियतें मिलतीं लेकिन भारतीय कैदियों के साथ बहुत बुरा सुलूक किया जाता था। जेल में उन्हें पहनने के लिए कैदियोंवाले कपड़े दिये जाते थे लेकिन भारतीय कैदियों के कपड़े न तो बदले जाते न ही उन्हें धुला जाता था। उनको जो खाना परोसा जाता वह बहुत खराब होता। उस पर चूहे और तिलचट्टे घूमा करते। वे राजनीतिक कैदी थे लेकिन उन्हें पढ़ने के लिए अख़बार तक न दिया जाता और न ही लिखने के लिए कलम और काग़ज़ । अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय कैदियों के साथ किए जाने वाले इस दुर्व्यवहार के ख़िलाफ़ जल्द ही जतिन दास और अन्य क्रांतिकारी भूख हड़ताल पर बैठ गए। क्रांतिकारियों का कहना था कि चूंकि कानून सबके लिए बराबर है इसलिए उन्हें भी जेल में वे सभी अधिकार मिलने चाहिए जो अंग्रेज़ कैदियों को मिले हुए थे।

अपनी इसी माँग को लेकर क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। उनकी हड़ताल तोड़ने के लिए जेल अधिकारी अनेक हथकण्डे अपनाते। क्रांतिकारियों का मन डिगाने के लिए उनकी कोठरियों के सामने

तरह-तरह का बढ़िया खाना और फल रखे जाते पर इस बात का उन पर कोई असर नहीं हुआ। उन्हें उनके इरादों से एक इंच भी हिलाया नहीं जा सका। जब जेल के अधिकारियों ने देखा कि इससे बात नहीं बन रही तब उन्होंने उन्हे जबरन खाना खिलाने की कोशिशें शुरू कर दी। अकसर 8-10 तगड़े जवान किसी एक क्रांतिकारी को पकड़कर उसे ज़बरदस्ती खाना खिलाने का प्रयास करते पर वह अपनी पूरी ताकत लगाकर उन जवानों का विरोध करता। आख़िर जब इससे भी अंग्रेज़ों की दाल नहीं गली तब उन्होंने डॉक्टरों का सहारा लिया। डॉक्टर रबड़ की पतनी नली को नाक के रास्ते खाने की नली में घुसेडने की कोशिश करते और इस तरह खाना खिलाकर क्रांतिकारियों का अनशन तोड़ने का काम करते।

एक दिन डॉक्टर इसी तरह से जतिन दास के नाक के रास्ते नली डालने की कोशिश कर रहा था। वह नली खानेवाली नली के बजाय उनके फेफड़ों में चली गई। इससे जतिन दास का दम घुटने लगा और जल्द ही उनकी हालत बिगड़ने लगी। बिगड़ती हालत को देखकर डॉक्टरों ने उनके मुँह में दवा डालने की कोशिश की पर जतिन दास अपने संकल्प के इतने पक्के थे कि उन्होने दवा लेने से इन्कार कर दिया। जतिन दास की तबियत जब और अधिक बिगड़ने लगी तब अंग्रेज़ों ने किसी तरह के इल्जाम से खुद को बचाने के लिए उन्हें रिहा करने और उनके केस को वापस लेने की बात करनी शुरू कर दी। जतिन दास को जब पता लगा कि क्रांतिकारियों की माँगे माने बिना ही सरकार उनकी रिहाई की बात कर रही है तब उन्होने अंग्रेज़ी हुकूमत की बात मानने से साफ़ इन्कार कर दिया।

अनशन के 63वें दिन 13 सितम्बर

1929 को जतिन दास की हालत बहुत अधिक बिगड़ गयी और आखिकार 25 वर्ष की छोटी सी ही आयु में वे शहीद हो गये। जतिन दास के पार्थिव शरीर के अन्तिम दर्शन के लिए जेल के फाटक पर लगभग सारा लाहौर शहर उमड़ पड़ा। अपने उद्देश्य के लिए मर मिटनेवाले इस क्रान्तिकारी नौजवान की कुर्बानी से पूरा देश हिल उठा। लाहौर ही नहीं, लाहौर से कलकत्ता वाले रेल मार्ग के सभी स्टेशनों पर और फिर कलकत्ता में उनके शव को अपनी अन्तिम सलामी देने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

जतिन दास का जीवन और उनका व्यक्तित्व इस बात की मिसाल है कि किस तरह अपनी परवाह किये बिना वे एक ऊँचे लक्ष्य के लिये जीये और अन्त तक अपने उसूलों के प्रति अडिग रहे। जतिन दास की शहादत को हम कभी नहीं भूल सकते।

श्वेता

विज्ञान

कॉसमॉस

प्रसिद्ध खगोलवैज्ञानिक और लेखक कार्ल सगान की विश्वप्रसिद्ध कृति से

(पांचवी किश्त)

विश्व महासंगीत का एक स्वर

मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त लोकों के मालिक की आज्ञा का पालन करूं। वही है जिसने तुम्हारी सृष्टि धूल से की है .. .. कुर्आन सुरा - 40

हज़ारों साल से (ईश्वरीय) आस्था को तार्किक आधार देने का जो व्यर्थ प्रयास चला, उस समय विश्व का प्राचीनतम दर्शन - सृष्टि के दर्शन को मानो हाथ पैर बांधकर घोर अंधेरे में झोंक दिया गया। पर डारविन ने (तर्कणा के) प्राचीनतम अवयव में जीवन से ओतप्रोत नये खून का संचार किया। बंधन छिन्न विछिन्न हो गये, (सृष्टि की) ऐसी कोई भी व्याख्या जिसे आस्था की स्वीकृति मिली थी और जिसका अगले सत्तर पीढ़ियों के अंधविश्वास ने स्वागत किया था, उन्हें हटाकर चीज़ों के समग्र विश्व-व्यवस्था की एक पूर्णतर अभिव्यक्ति के रूप में, पुनरुज्जीवित यूनानी

विचारधारा ने खुद को स्थापित कर लिया।

टी.एच. हकसले 1887

संभव है कि प्राणों के उन तमाम रूपों की उत्पत्ति, जो इस धरती पर आज तक किसी न किसी समय अस्तित्वमान रहे हों, किसी एक आदिम स्वरूप से हुआ हो, जो सर्वप्रथम प्राणों के स्पन्दन से जाग उठा था। जीवन की इस अवधारणा में एक उदात्त गरिमा है..... कि एक ओर जब ग्रह गुरूत्वाकर्षण के नियत नियम से सूर्य की परिक्रमारत था, एक अति साधारण सी शुरूआत से अगण्य परम सुंदर और विस्मयकारी रूप विकसित होते जा रहे थे, और वह क्रम अभी भी ज़ारी है।

चार्ल्स डार्विन, प्रजातियों की उत्पत्ति, 1859

ऐसा प्रतीत होता है कि पदार्थों का एक पूरा समुदाय सारे दृश्य ब्रह्मांड में अस्तित्वमान है, क्योंकि वे तत्त्व जो सूर्य और पृथ्वी में पाये जाते हैं, उनमें से अनेक तारों में भी मिलते हैं। यह उल्लेखनीय है कि वे तत्त्व जो तमाम तारों में व्यापकतम रूप से बिखरे हुए हैं, वही हैं जो हमारे ग्रह के जीवों के साथ निगूढ़ रूप से संपृक्त हैं, जिनमें हाइड्रोजन, सोडियम, मैग्नेशियम और लोहा शामिल हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि कम से कम उज्ज्वलतर तारें हमारे सूरज की तरह, उन समस्त लोकों के धारक और ऊर्जा के स्रोत हों, जो प्राणियों के आवास के रूप में अनुकुलित हो गये हैं?

विलियम हगिन्स, 1805

पृथ्वी के परे क्या और कहीं जीवन की संभावना है? यह मेरा जीवन भर का कौतुहल रहा। कैसा हो सकता है यह जीवन? वे कौन से तत्व हैं जिनसे यह जीवन बना होगा? हमारे ग्रह के सारे प्राणियों का निर्माण जैव अणुओं से हुआ है - ये जैव अणु अपने आप में अतिक्षुद्र पर जटिल स्थापत्य हैं - हर जैव अणु की केन्द्रीय भूमिका निभाने वाला कार्बन का परमाणु है। एक समय वह था, जब धरती पर प्राण का आविर्भाव नहीं हुआ था - वंध्या और वीरान थी हमारी यह धरती। फ़िर एक समय ऐसा आया जब धरती में प्राणों का उफ़ान हुआ। कैसे हुआ यह सब? ये कार्बन आधारित जैव-अणु, प्राण की अनुपस्थिति में कैसे बन गये? सबसे पहले वाले जीवों की उत्पत्ति कैसे हुई? जैव विकास का सफ़र इस मंज़िल तक कैसे पहुँचा कि हम जैसे सुविन्यस्त और जटिल प्राणियों का निर्माण हो पाया, जो इतने सक्षम प्राणी है कि खुद अपनी उत्पत्ति के रहस्यों को जानने का अनुसन्धान करते हैं?

और वे जो और सूर्य की परिक्रमा कर रह दूसरे असंख्य ग्रह हैं, क्या वहाँ भी जीवन है? अपार्थिव जीवन, यदि उसका कोई अस्तित्व हो, क्या उसका आधार भी वही जैव-अणु हैं, जिनसे पृथ्वी के प्राणी बने हैं? कैसे हैं ये दूसरे लोकों के प्राणी, इस धरती के प्राणियों से काफी मिलते जुलते हैं, या वे बिल्कुल अलग तरह के हैं, दूसरे वातावरण में पले बढ़े दूसरे तरह के जीव? और क्या कुछ हो सकता है? असल में पृथ्वी के जीवों के स्वरूप और दूसरे लोकों में जीवन की खोज। यह दोनो एक ही प्रश्न के दो पहलू हैं - हम जानना चाहते हैं कि हम कौन हैं?

तारों के बीच के उस गहन और नि:सीम अंधेरे में जैव-द्रव्य के धूल और बादल पाये जाते हैं। रेडियो तरंग संवेदी दूरबीनों के सहारे धूल और गैस के उन बादलों में दर्जनों विभिन्न प्रकार के जैव अणु खोजे जा चुके हैं। जिस प्रचुरता में ये अणु पाये गये हैं वह यह दर्शाता है कि जीवन बनाने वाले पदार्थ सर्वत्र विद्यमान हैं। यदि पर्याप्त

समय मिले, तो जीवन की उत्पत्ति और विकास, एक विश्वव्यापी अवश्यंभावी परिघटना है। इसका माने क्या है? हमारी आकाशगंगा मंदाकिनी के अरबों ऐसे ग्रह होंगे जहाँ जीवन का उद्‌भव कभी भी नहीं हो, पर दूसरे ऐसे असंख्य ग्रह होंगे जहाँ प्राण का सृष्टि और लय दोनों ही संभव है, या ऐसा भी हो सकता है कि प्राण का उद्‌भव हो परन्तु उसका विकास एक अत्यंत प्रारंभिक सरलतम अवस्था के पार कभी नहीं जा सके। पर कुछ छोटे इलाकों में यह भी हो सकता है कि हमसे कहीं उन्नत, विकसित मेधासम्पन्न सभ्यतायें विकसित हुई हों।

समय-समय पर ऐसे मंतव्य सुनने को मिलते हैं कि कैसा यह विचित्र संयोग है कि धरती का परिवेश जीवन के लिये सर्वथा अनुकुल है - न अधिक ठंड न ही अधिक गर्मी, जल का तरल अवस्था में पाया जाना, प्राणवायु (ऑक्सीजन) से भरपूर वातावरण, आदि-आदि .....। पर ऐसे मंतव्य वे लोग करते हैं जो कम से कम आंशिक रूप से कार्य और कारण में भेद करने में विभ्रम का शिकार हैं। हम धरतीवासी इसलिए धरती के वातावरण के साथ पूर्णत: अनुकुलित हैं क्योंकि हम इसी वातावरण में पैदा और फिर विकसित हुये हैं। हमलोगों का विकास उन जीवधारियों से हुआ है जो इस वातावरण में टिक पाये। किसी दूसरे लोक के प्राणी जिनकी उत्पत्ति किसी सर्वथा भिन्न प्रकृति के वातावरण में हुआ है, बेशक वे उसकी ही यशोगाथा गायेंगे।

पृथ्वी के सारे जीव एक-दूसरे के घनिष्ठ आत्मीय हैं। हम सबका एक साझा जैव-रसायन है, विकास की हम सबकी एक साझा विरासत है। फलत: हमारे जीवविज्ञानियों का ज्ञान नितांत एकांगी और सीमित है। उन्होंने केवल एक ही जीवविज्ञान का अध्ययन किया है, जीवन संगीत के केवल एक ही स्वर को सुना है। पर यह क्षीण वेणु ध्वनि क्या हज़ारों आलोकवर्षों में एकमात्र स्वर है? या शायद एक विश्वव्यापी महासंगीत है, जिसमें अनेकों स्वर और स्वरांतर हैं, कहीं सुर में कहीं बेसुर में, कोटि-कोटि विभिन्न आवाजें मंदाकिनी की जीवन संगीत गा रही हैं।

मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ पृथ्वी के

जीवन संगीत का एक अति संक्षिप्त पद। सन् 1185 में, एक सात साल का बालक अन्दोकु जापान का सम्राट था पर वह निरंकुश था। उत्तराधिकारी के आधार पर बालक समूराइयों (योद्धा) के एक कबीला हाइके का सरदार भी था। समुराइयों के एक और कबीले नेन्जी और हाइके के बीच एक लम्बी और खूनी लड़ाई चल रही थी। दोनों पक्ष मानते थे कि सिंहासन पर उसी के वंश का हक है। 25 अप्रैल 1185 में जापानी खाड़ी दन्नोउरा में दोनों के लश्करों के बीच की लड़ाई निर्णायक घड़ी में पहुँच चुकी थी, सम्राट उस समय जहाज में मौजूद थे। संख्या और रणकौशल दोनों में हाइके कबीला कमज़ोर साबित हुआ। अनेक लोग मारे गये। युद्ध में जो बच गये, उनकी एक बहुत बड़ी तादाद समुद्र में कूद पड़ी और डूब गई। लेडी नी ने जो कि सम्राट की दादी थी, तय किया कि वह अन्दोकु और खुद को किसी भी कीमत पर दुश्मन के पकड़ में नहीं आने देगीं। इसके बाद जो कुछ हुआ वह हाइके की गाथा में वर्णित है।

बालक सम्राट अपनी सात साल की उम्र से कहीं अधिक बड़ा लगता था। उज्ज्वल आभामय था उसका सौन्दर्य, उसके घने काले और लम्बे बाल खुले हुए थे और कमर तक पहुँच गये थे। उसकी आँखों में विस्मय था और आशंका भी जब उसने लेडी नी से पूछा - ''तुम मुझे कहाँ ले जाओगी?''

वे तरुणाई से भरे राजा की ओर मुड़ीं, आँसुओं की धार उनके गालों पर अविरल बह रही थी, और उन्होंने उसके लंबे बालों को उसके फ़ाख्ते की रंगवाली पोशाक में समेटती हुए उसे आश्वस्त किया। आँसुओं से उसकी आँखें धुंधली हो गयी थीं, नन्हे राजा ने अपने सुन्दर छोटे हाथों को जोड़ लिया। पहले उसने पूरब की तरफ मुड़कर आइज़ के देवता से विदा मांगा, फिर पश्चिम की ओर मुड़कर नेम्बुत्सु प्रार्थना की। लेडी नी ने उसे कसकर अपनी बाँहों में भर लिया और कहा - ''सागर की गहराई में हमारा मंदिर है।''। यह कहते हुए उसने राजा को लेकर छलांग लगाई और लहरों तले विलीन हो गयी।

हाइके की पूरी लश्कर ध्वंस हो गई। केवल तैतालिस स्त्रियाँ मरने से बच गयीं। राजवधुओं और राजकुमारियों की ये सहचरियाँ अब रणस्थली के आस-पास के टापुओं के मछुआरों को फूल और अपना सब कुछ बेचने को विवश थीं। इतिहास के पन्नों से हाइके लोग लगभग मिट गये। पर अपमानित और समाज परित्यक्ता ये सहचरियाँ तथा उनकी व मछआरों की सन्तानों ने मिलकर उस अन्तिम लड़ाई की याद को जवित रखने के लिए एक पर्व की शुरुआत की। उस समय से आज के दिन तक हर साल 24 अप्रैल को यह पर्व मनाया जाता है। वे मछुआरे जो हाइके के वंशज हैं, शण (पटुआ) के कपड़े और सर में काली पगड़ी बाँधकर अकामा के समाधि पर मिलते हैं, जहाँ समुद्र के गर्भ में समाहित सम्राट का मकबरा है। वहाँ वे दानोउरा के उस अंतिम लड़ाई के बाद की घटनाओं का वर्णन करता एक नाटक देखते हैं। शताब्दियाँ बीत गयीं, पर लोग कहते हैं कि वे अब भी देखते हैं कि किस तरह समुराई फौजें समुद्र से बाहर आने की, उसके पानी में घुले खून को, हार और अवमानना को हटाकर उसे निर्मल बनाने की व्यर्थ कोशिश कर रहे हैं।

मछुआरे कहते हैं कि हाइके समुराई आज तक जापानी समुद्र की गहराईयों में केकड़ों का रूप लिये भटकते फिर रहे हैं।

प्रस्तुति : देवाशीष बराट

उज़बेक लोककथा

मरता क्या न करता

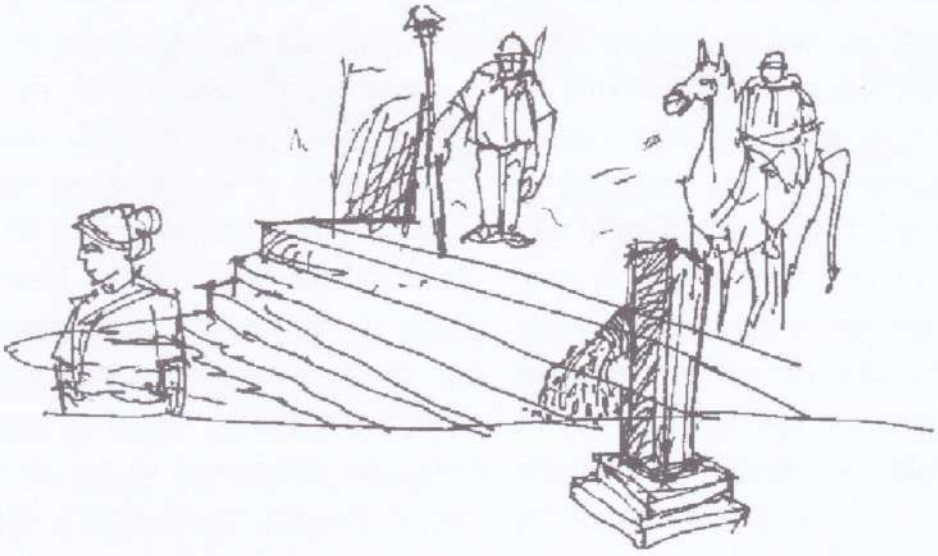

बहुत समय पहले एक बूढ़ा रहता था। एक बार बूढ़े की पत्नी नहाने के लिए हमाम में गयी। पर अपनी बारी आने पर भी वह नहा न सकी। बादशाह का नौकर आकर बोला :

''अभी बादशाह के प्रधान ज्योतिषी की पत्नी आकर नहायेगी, इसलिए हमाम इसी वक्त खाली कर दो!''

घर आकर बूढ़े की पत्नी बोली :

''बादशाह के ज्योतिषी का पद बहुत ऊँचा होता है, वह बहुत महत्वपूर्ण आदमी होता है, सब पर उसका रोब रहता है। तुम भी भविष्य बताना सीखकर ज्योतिषी बन जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी।''

बूढ़े को भविष्य बताना बिल्कुल भी नहीं आता था। पर मरता क्या न करता। उसने लकड़ी का एक चौकोर टुकड़ा लेकर एक तरफ से उस पर लाल रंग फेरा, दूसरी ओर से - काला, तीसरी ओर से - सफेद, चौथी ओर से - नीला, पाँचवीं ओर से - पीला और छठी ओर से - हरा। लकड़ी के चौकोर टुकड़े और एक घिसे-पिसे कागज को थैले में डालकर वह बाजार में एक ऐसी जगह बैठ गया, जहाँ भीड़ ज्यादा रहती थी। जब कोई आदमी उसके पास अपना भविष्य पूछने आता, तो वह लकड़ी का रंगबिरंगा पासा फेंककर उसकी ओर देखते हुए जो जी में आता कह देता। कुछ ही दिनों में नये ''ज्योतिषी'' की ख्याति सारे शहर में फैल गयी।

उन दिनों बादशाह के लगान उगाहने वाले इकट्ठा हुआ सोना खच्चरों पर लादकर शहर में लाये थे। एक सोने से लदा खच्चर लापता हो

गया।

बादशाह ने अपने सारे ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा, पर उनमें से कोई भी न बता सका कि खोया हुआ खच्चर कहाँ मिल सकता है। बादशाह का एक दरबारी बोला :

''हुजूर, अभी कुछ दिनों से एक नया ज्योतिषी बाजार में बैठ रहा है। वह बिल्कुल सही बात बताता है और उसका बताया हुआ कभी गलत नहीं होता।''

बूढ़े को दरबार में लाया गया। बादशाह बोला :

''मेरा सोने से लदा एक खच्चर गायब हो गया है। तुम बताओ, वह कहाँ है। अगर नहीं बताया, तो तुम्हारा सिर काट डालूँगा।''

बूढ़े ने थैले में से अपना रंगबिरंगा पासा निकालकर फेंका और उसकी ओर देखकर लगान उगाहने वाले से पूछा :

''शहर के पास पहुँचते-पहुँचते आप कहीं रुके तो नहीं थे?''

''हाँ, हम खच्चरों को चराने के लिए पेड़ों के एक झुरमुट के पास रुके थे।''

बूढ़े ने सोचा : ''आराम करने के बाद इन लोगों ने खच्चरों की गिनती नहीं की होगी और एक खच्चर पेड़ों के झुरमुट में ही रह गया होगा।''

बूढ़ा बादशाह की ओर देखकर बोला :

''आपका खोया हुआ खच्चर झुरमुट में है। आप किसी आदमी को वहीं भेज दीजिए।''

बादशाह ने अपने आदमी भेजे। बूढ़े की बतायी हुई बात बिल्कुल ठीक निकली। खोया हुआ खच्चर मिल गया। बादशाह ने बूढ़े को सिर से लेकर पैर तक बेशकीमती तोहफों से लाद दिया और उसे अपने दरबार में ही रख लिया।

एक बार बादशाह के खजाने में चोरी हो गयी। चोर सोने का एक बोरा उठा ले गये। बादशाह ने अपने चालीसों ज्योतिषियों को बुलाकर कहा :

''सोने की चोरी का पता लगाओ! अगर पता नहीं लगा, तो सबको जान से मार डालूँगा।''

बूढ़े ने चालीस दिन की मोहलत माँगी।

''अगर चालीस दिन में हम चोर और माल का पता न लगा पायें, तो आप हमें मार दीजिए!'' बूढ़ा बोला।

बूढ़े ''ज्योतिषी'' ने बाजार से चालीस सूखी खूबानियाँ खरीदीं। घर आकर वह पत्नी से बोला :

''तुम चाहती थी कि मैं मर जाऊँ। अगर चालीस दिन के अंदर-अंदर मैंने चोरों और माल का पता नहीं लगाया, तो बादशाह मुझे मार डालेगा। मैं नहीं कह सकता कि सोना कहाँ है। तुमने ही ज्योतिषी बनने के लिए मुझे मजबूर किया था, पर मैं तुम्हें माफ करता हूँ। अब मुझे चालीस दिन ही जिंदा रहना है, इसलिए तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करना और प्यार से रहना।''

अब चोरों और सोने के बोरे का हाल सुनिये।

सोने का बोरा चालीस चोरों ने चुराया था। उनका सरदार लँगड़ा था।

चोरों का पता लगा कि एक नया ज्योतिषी आया है और वह चालीस दिन में चोर और माल दोनों का पता लगा लेगा।

सरदार ने शाम को अपने दल के एक आदमी को हुक्म दिया :

''जाकर देखो, वह बूढ़ा ज्योतिषी क्या कर रहा है।''

चोर बूढ़े के घर में छुपकर सुनने लगा।

बूढ़ा उस समय पहली खूबानी खाकर पत्नी से कह रहा था :

''देखो, चालीस थे, उनमें से एक यहाँ पहुँच गया,'' बूढ़े ने अपने पेट की ओर इशारा किया।

चोर घबराया : ''इसे मालूम है कि हम चालीस हैं, और मैं इसके घर में छुपा हूँ।''

वह भागा-भागा अपने साथियों के पास पहुँचा और बोला :

''जैसे ही मैं बूढ़े ज्योतिषी के घर में घुसा वह कहने लगा : 'चालीस में से एक चोर यहाँ है।' अगर हमने उसके साथ समझौता नहीं किया, तो हम सब पकड़े जायेंगे।''

''डरपोक कहीं का! सरदार गुस्सा हो उठा। ''उसने किसी और चीज के बारे में कहा होगा और तूने अपने बारे में समझ लिया। कल किसी को साथ लेकर जाना!''

दूसरे दिन दो चोर बूढ़े के घर में घुसे और छुपकर सुनने लगे।

बूढ़े ने उसी समय एक और खूबानी खायी थी और वह पेट की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कह रहा था :

''देखो चालीस में से दो अब यहाँ पहुँच गये।''

''हमारे बारे में ही कह रहा है,'' चोरों ने सोचा और वहाँ से भाग निकले।

तीसरे दिन चोरों का सरदार अपने दो आदमियों के साथ स्वयं आया।

उसी समय बूढ़े ने एक और खूबानी खायी थी। वह खूबानी खराब थी, इसलिए बूढ़ा अध खायी खूबानी पत्नी को दिखाकर कह रहा था।

''देखो, अब तीन यहाँ पहुँच गये हैं, पर इनमें से एक में कुछ खोट है।''

''सचमुच, यह तो हमारे बारे में ही कह रहे हैं! इसे तो हमारे लँगड़े सरदार का भी पता लग गया!'' चोरों ने सोचा। सरदार ने फौरन एक आदमी को घर से सोने की बोरी लाने के लिए भेजा। जब सोने की बोरी आ गयी, तो सरदार ने ज्योतिषी का किवाड़ खटखटाया।

बूढ़े ने पूछा :

''कौन है?''

''आपको तो मालूम ही है कि हम लोगों ने खजाने से सोने का बोरा चुराया था। लेकिन हमने इसमें से एक भी अशरफी नहीं निकाली है। वह बोरा हमने एक सुरक्षित जगह में, चिमनी के अन्दर छुपा दिया है और सोने की यह बोरी आपको भेंट कर रहे हैं। हमें मुसीबत से बचाइये,

हमारे बारे में बादशाह को कुछ भी न बताइये,'' सरदार बोला।

''मैं तो उसी दिन जान गया था कि खजाने में चोरी तुम्हीं लोगों ने की है,'' बूढ़े ने डींग हाँकी, ''पर मुझे तुम पर दया आ गयी। मैंने सोचा, तुम लोग खुद ही आकर बता दोगे। इसीलिए तो मैंने चालीस दिन की मोहलत ली थी। तुम सोने की बोरी यहाँ छोड़ो और अपने-अपने घर जाओ।''

दूसरे दिन ही बूढ़ा बादशाह के पास पहुँचा।

''हुजूर, मैंने आपके सोने का पता लगा लिया है। पर चोर हाथ नहीं आ सके, वे लोग किसी दूसरे शहर में भागकर छुप गये हैं।'' बूढ़े ने वह जगह भी बता दी जहाँ सोना छुपा हुआ था। ''आप अपने वफादार नौकरों को उसे लेने भेज दीजिए,'' उसने बादशाह को सलाह दी।

बादशाह ने फौरन अपने आदमी दौड़ाये। उन्हें बूढ़े की बतायी हुई जगह में सोना मिल गया। बादशाह ने उसी समय अपने प्रधान ज्योतिषी को बुलाकर चालीस कोड़े लगवाये और उसे हटाकर बूढ़े को अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया।

बूढ़ा घर आकर पत्नी से बोला :

''लो, तुम जो चाहती थी, वही हो गया हूँ। बादशाह ने मुझे अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया है। जिस दिन मेरी मौत आयेगी मर जाऊँगा, पर तब तक के लिए तो मैं बड़ा आदमी बन ही गया।''

एक बार बूढ़ा हमाम में नहाने गया। वह अपने सिर में दही मलकर धोने लगा। नहाते-नहाते वह सोचने लगा :

''क्या करूँ? किस तरह बादशाह से पीछा छुड़ाऊँ? ठीक है, मैं पागल होने का ढोंग रचता हूँ। यहाँ से नंगा भागकर बादशाह का गरेबान पकड़ लूँगा और उसे बाहर खींच लाऊँगा। जब वह देखेगा कि मैं पागल हो गया हूँ, तो वह मुझे निकाल देगा। इसके अलावा अब कोई दूसरा चारा नहीं रहा।''

बूढ़ा हमाम से नंगा निकलकर महल की ओर भागा। बादशाह बरामदे में बैठा था। बूढ़े ने जाकर बादशाह का गरेबान पकड़ लिया। बादशाह और उसके अंगरक्षक भौचक्के रह गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। बूढ़ा बादशाह को घसीटता हुआ बाहर ले आया।

संयोग से उसी समय भूकम्प आया और बरामदे की छत टूटकर नीचे गिर पड़ी।

बादशाह को काटो तो खून नहीं। फिर जब उसे होश आया तो उसने पूछा :

''तुम्हें इसका पता कैसे चला?''

''मैं हमाम में बैठा नहीं रहा था। अचानक मुझे पता लगा कि आप पर मुसीबत आने वाली है। आपके प्राण बचाने के लिए मैं बिना कपड़े पहने, शर्म-हया छोड़कर नंगा ही भागा आया। इसलिए मैंने आपको जबर्दस्ती बरामदे से उठाया और यहाँ खींच लाया।''

बादशाह बूढ़े की और भी ज्यादा इज्जत करने लगा, उसे बहुत कीमती इनाम दिये और हमेशा अपने साथ रखा।

''मैंने कभी तुम जैसा ज्योतिषी नहीं देखा!'' बादशाह कहता रहता।

एक बार बादशाह खेत में घूम रहा था। उसने एक टूटी टांगवाला टिड्डा पकड़कर हाथ में बन्द कर लिया। ''ज्योतिषी से पूछकर देखता हूँ, वह बता सकता है या नहीं कि मेरे हाथ में क्या है।'' बादशाह ने मन में सोचा और बूढ़े से पूछा :

''अच्छा, बताओ, मेरे हाथ में क्या है?''

बूढ़ा घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। ''अब मैं कैसे जान बचाऊँ?'' उसने सोचा और जोर-जोर से अपने बारे में बोलने लगा :

''पहली बार फँसते-फँसते बचा, पर तीसरी बार बुरी तरह फँस गया।''

''शाबाश! तुमने बिल्कुल ठीक बताया!'' बादशाह ने मुट्ठी खोलकर उसे टिड्डा दिखाया। कुछ दिन बाद बूढ़ा बादशाह के पास आकर बोला :

''हुजूर, मैं आपसे एकांत में कुछ कहना चाहता हूँ।''

बादशाह ने बाकी सब लोगों को बाहर भेज दिया।

''बोलो, क्या कहना चाहते हो!''

''हुजूर, मैं ज्योतिषी नहीं हूँ। मैंने मुसीबत में पड़ जाने पर ही भविष्य बताना शुरू किया था।''

बूढ़े ने बादशाह को अपनी पूरी कहानी सुना दी। बादशाह सुनकर बहुत देर तक हँसता रहा। फिर उसने बूढ़े को प्रधान ज्योतिषी के पद से मुक्त करके वापस घर जाने की इजाजत दे दी।

कविता

सतपुड़ा के घने जंगल

भवानी प्रसाद मिश्र

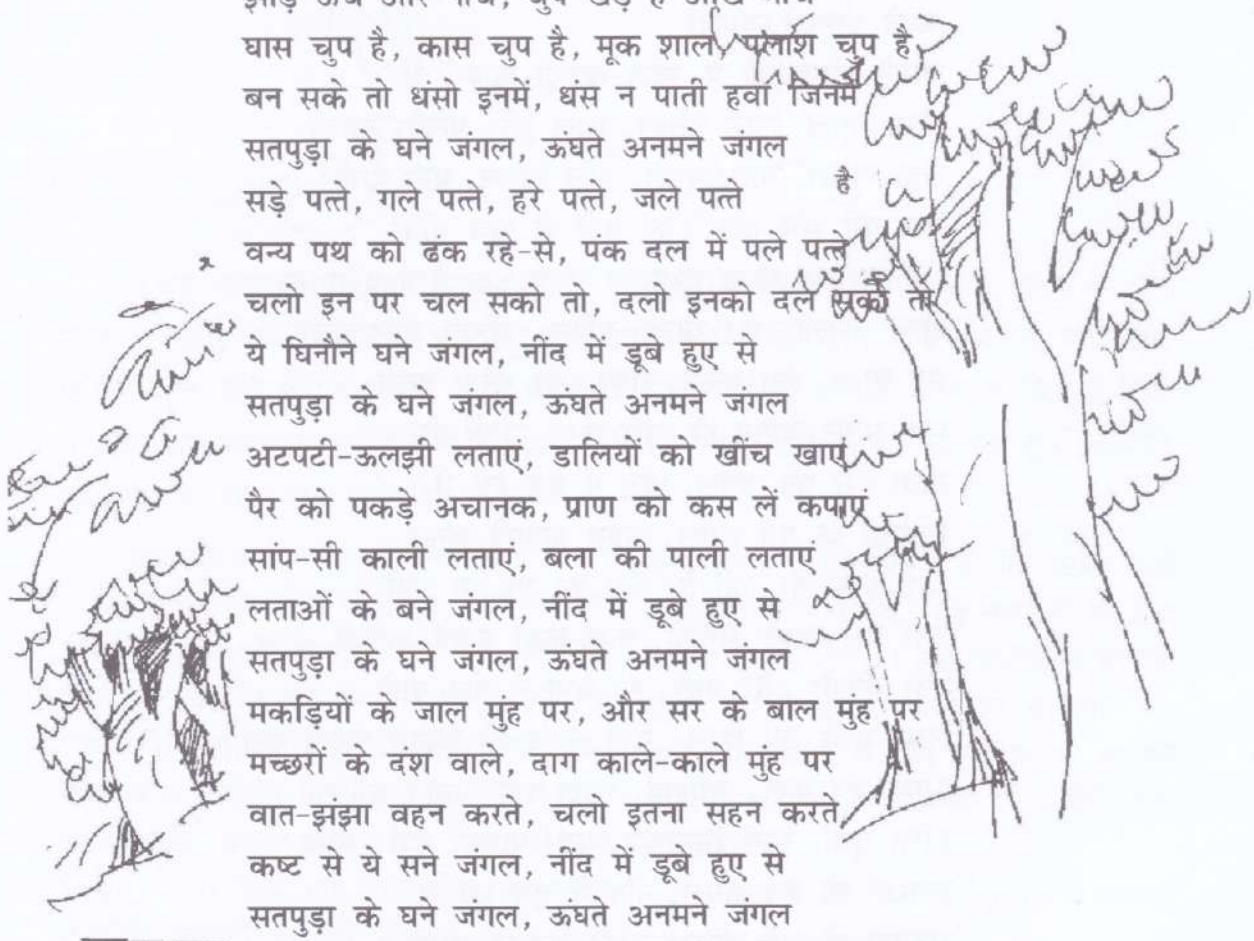

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से, ऊंघते अनमने जंगल
झाड़ ऊंचे और नीचे, चुप खड़े हैं आंख मींचे
घास चुप है, कास चुप है, मूक शाल, पलाश चुप है
बन सके तो धंसो इनमें, धंस न पाती हवा जिनमें
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
सड़े पत्ते, गले पत्ते, हरे पत्ते, जले पत्ते
वन्य पथ को ढंक रहे-से, पंक दल में पले पत्ते
चलो इन पर चल सको तो, दलो इनको दल सको तो
ये घिनौने घने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
अटपटी-ऊलझी लताएं, डालियों को खींच खाएं
पैर को पकड़े अचानक, प्राण को कस लें कपाएं
सांप-सी काली लताएं, बला की पाली लताएं
लताओं के बने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
मकड़ियों के जाल मुंह पर, और सर के बाल मुंह पर
मच्छरों के दंश वाले, दाग काले-काले मुंह पर
वात-झंझा वहन करते, चलो इतना सहन करते
कष्ट से ये सने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
अजगरों से भरे जंगल, अगम, गति से परे जंगल

सात-सात पहाड़ वाले, बड़े छोटे झाड़ वाले
शेर वाले, बाघ वाले, गरज और दहाड़ वाले
कम्प से कनकने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
इन वनों के खूब भीतर, चार मुर्गे, चार तीतर
पालकर निश्चिन्त बैठे, विजन वन के बीच पैंठे
झोपड़ी पर फूस डाले, गोंड तगड़े और काले
जबकि होली पास आती, सरसराती घास गाती
और महुए से लपकती, मत्त करती बास आती
गूंज उठते ढोल इनके, गीत इनके, बोल इनके
सतपुड़ा के घने जंगल, नींद में डूबे हुए से
ऊंघते अनमने जंगल।
जागते अंगड़ाइयों में, खोह-खड्ढ़ों खाइयों में
घास पागल, कास पागल, शाल और पलाश पागल
लता पागल, वात पागल, डाल पागल, पात पागल
मत्त मुर्गे और तीतर, इन वनों के खूब भीतर
क्षितिज तक फैला हुआ-सा, मृत्यु तक मैला हुआ सा
क्षुब्ध, काली लहर वाला, मथित, उत्थित जहर वाला
मेरु वाला, शेष वाला, शम्भु और सुरेश वाला
एक सागर जानते हो, उसे कैसा मानते हो?
ठीक वैसे घने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल
धंसो इनमें डर नहीं है, मौत का यह घर नहीं है
उतर कर बहते अनेकों, कल-कथा कहते अनेकों
नदी, निर्झर और नाले, इन वनों ने गोद पाले
लाख पंछी, सौ हिरन- दल, चांद के कितने किरन दल
झूमते बन-फूल, फलियां, खिल रहीं अज्ञात कलियां
हरित दूर्वा, रक्त किसलय, पूत, पावन, पूर्ण रसमय
लताओं के बने जंगल, नींद में डूबे हुए से
सतपुड़ा के घने जंगल, ऊंघते अनमने जंगल

पापा जब बच्चे थे

पापा ने अपनी ताकत आजमाई

अलेक्सान्द्र रास्किन

(बड़े हमेशा बच्चों को यह सीख देते रहते हैं कि उन्हें कौन सा काम करना है और कौन सा नहीं। पापा-मम्मी भी हर घड़ी यही बताते हैं कि यह काम करो और यह मत करो! वे यह भूल जाते हैं कि वे भी कभी बच्चे थे और वैसी ही शरारतें करते थे जिसके लिए वे आज तुम पर लाल-पीले होते हैं। यहां ऐसी ही एक घटना के बारे में हम तुम्हें बतायेंगे जो पापा के साथ तब घटी जब वे बच्चे थे-सं)

पापा जब बच्चे थे, तब उनके कई दोस्त थे। वे रोज साथ-साथ खेला करते थे। कभी-कभी वे झगड़ पड़ते थे और हाथापाई तक कर बैठते थे। इसके बाद वे फिर मेल कर लेते थे। लेकिन एक लड़का ऐसा था, जो कभी नहीं लड़ता था। उसका नामा वोवा नजारोव था। वह एक ठिगना और हट्टा-कट्टा लड़का था। उसके पिता फौज में रिसाले में थे। वोवा को अपने पिता के मशहूर कमांडर, बुद्योन्नी के बारे में बातें करना बहुत पसन्द था। वह और लड़कों को बताया करता था कि बुद्योन्नी कितने बहादुर हैं और सफेद गार्डों (रूस की लाल सेना की शत्रु सेना) के खिलाफ वह किस तरह लड़े थे। उन्हें जनरलों या कर्नलों, बंदूकों या तलवारों से कभी डर न लगता था। वोवा को बुद्योन्नी के घोड़े और तलवार के बारे में सभी बातें मालूम थी। वह हमेशा यही कहा करता था :

''जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तो मैं बुद्योन्नी की तरह ही बनूँगा!''

पापा को वोवा के पास जाना अच्छा लगता

था। वोवा के घर हमेशा बड़ा मंजर होता था। वोवा सदा काम में लगा होता था : उसे दूकान से रोटी लानी होती थी, चूल्हे के लिए लकड़ी काटनी होती थी, फर्श पर झाड़ू लगानी होती थी और बर्तन साफ करने होते थे। पापा ने देखा कि घर में सभी वोवा को प्यार करते हैं। अक्सर वोवा के पिताजी उससे इस तरह बात किया करते थे, मानो वह कोई बड़ा आदमी हो :

"वोवा, रविवार को खाने के लिए किसे बुलाना है?"

"तुम्हारे ख्याल से वसंत के लिए लकड़ी काफी होगी, वोवा?"

और वोवा को हमेशा मालूम होता था कि जवाब क्या देना चाहिए।

अगर वोवा का कोई दोस्त घर आता, तो वे उसे बिठाकर कोई अच्छी चीज खिलाते। फिर सभी खेल खेला करते। पापा को सदा इस बात का दुख रहता था कि उनके घर वोवा के घर जैसा मजा नहीं आता। पापा और वोवा अच्छे दोस्त थे। मगर उनकी समझ में यह नहीं आता था कि वोवा कभी लड़ना क्यों नहीं चाहता। पापा ने उससे पूछा : "तुझे लड़ने से डर लगता है क्या?"

वोवा ने जवाब दिया :

"अपने ही दल के खिलाफ लड़ने का क्या फायदा?"

एक बार लड़के यह बहस कर रहे थे कि सबसे मजबूत कौन है। एक लड़के ने कहा :

"मैं अपने से बड़े लड़कों से भी नहीं डरता। मैं तुम सबको पिल्लों की तरह उठाकर फेंक सकता हूँ। देखो जरा मेरी मांसपेशियाँ!"

दूसरा लड़का बोला :

"मैं इतना ताकतवर हूँ कि मैं खुद इस पर विश्वास नहीं कर सकता। खासकर मेरा बायाँ हाथ – वह तो फौलाद का बना है!"

तीसरा लड़का बोला :

"अगर तुम यह देखना चाहो कि सचमुच मैं कितना ताकतवर हूँ, तो तुम्हें मुझे गुस्से से

भरना होगा। और तब तो मुझसे दूर रहने में ही खैर है, क्योंकि फिर अपने किये के लिए मैं जिम्मेदार नहीं।''

पापा बोले :

''तुमसे बहस करने में कोई तुक नहीं। मुझे पता है कि मैं तुम सबसे ज्यादा ताकतवर हूँ।''

वे शेखी बघारते रहे, मगर वोवा नजारोव ने एक शब्द भी नहीं कहा। तब एक लड़का बोला :

''मैं बताऊँ – चलो हो जाये कुश्ती! जो जीतेगा, वही सबसे ताकतवर होगा।''

लड़के तैयार हो गये। उन्होंने कुश्ती लड़ना शुरू कर दिया। हर कोई वोवा से लड़ना चाहता था। वह कभी भी नहीं लड़ता था और उन सभी का ख्याल था कि वह कमजोर है।

शुरू-शुरू में वोवा कुश्ती नहीं लड़ना चाहता था। लेकिन जब उसे उस लड़के ने दबोच लिया, जिसका बायां हाथ फौलाद का बना हुआ था, तो वोवा गुस्से में आ गया और उसने सेकेंड भर में उसे जमीन पर पटक दिया। इसके बाद जिस लड़के ने सभी को पिल्लों की तरह चारों तरफ फेंक देने की धमकी दी थी, उसने अपने को जमीन पर चित्त पड़े पाया। इसके बाद वह लड़का आया, जो गुस्से में आने पर ताकतवर हो जाता था, वह यही चिल्लाता रहा कि अभी मैं गुस्सा नहीं हुआ हूँ, मगर वोवा तब तक उसे जमीन पर फेंक चुका था। इसके बाद वोवा ने पापा को भी चित्त कर दिया। लेकिन क्योंकि वे बहुत अच्छे दोस्त थे, इसलिए वोवा ने यही दिखाया कि पापा को पछाड़ना ही सबसे मुश्किल था।

''वोवा, तू ही तो सबसे ताकतवर है। तूने कभी कुछ क्यों नहीं कहा?'' लड़कों ने पूछा।

वोवा हँस पड़ा और बोला :

''शेखी बघारने से क्या फायदा?''

लड़कों के पास कहने को कुछ न था। लेकिन तभी से उन्होंने अपने ताकत के बारे में शेखी बघारना छोड़ दिया और पापा ने महसूस कर लिया कि सचमुच ताकतवर होने के लिए शेखी बघारना जरूरी नहीं है। अब उन्हें वोवा पहले से भी ज्यादा अच्छा लगने लगा।

कई साल बीत गये। पापा बड़े हो गये हैं। वह दूसरे शहर में आ गये हैं और उन्हें पता नहीं कि वोवा कहाँ है। मगर उन्हें इस बात का यकीन है कि वह अच्छा आदमी बना होगा।

मोहन जादूगर कैसे बना!

एक बार मोहन ने जादूगर बनने का फैसला किया और गीता ने उसको जादूगरी सिखाने का! गीता ने मोहन को इस प्रकार के जादू सिखाये :

1.

जादू नम्बर 1 – बच्चों ने एक बहुत बारीक धागे से एक बाट बाँधा और उसे एक कील पर लटका दिया। फिर उन्होंने नीचे से उसी बाट पर एक मोटा धागा बाँध लिया। मोटे धागे को इस प्रकार खींचना था कि वह तो टूट जाये पर बारीक धागा साबुत रहे। मोहन ने मोटे धागे को ऐसे खींचा कि ऊपर वाला बारीक धागा टूट गया और बाट नीचे गिर पड़ा। मोहन का पैर बाल-बाल बच गया।

– ऐसे नहीं, – मोहन की अध्यापिका चिल्लायी – धागा पकड़कर उसे झटके से इस प्रकार खींचना चाहिए कि बाट अपनी जगह से हिल न पाये। तुम तो जानते ही हो कि वह भारी और आलसी है।

इस बार गीता ने मोटे धागे को सिरे से पकड़ा और एक झटका दिया। मोटा धागा टूट गया पर बारीक साबुत रहा।

–कमाल है! – जादूगर ने सिर हिलाकर कहा।

2.

जादू नम्बर 2 – बच्चों ने पतले कागज के दो छल्ले बनाये और उनको लोहे के बने दो पैमानों के सिरों पर लटका दिया। इन पैमानों को मोहन ने हाथों से पकड़ रखा था। इसके बाद उन्होंने लकड़ी की एक लम्बी पट्टी पर चोट मारी – चट! पट्टी टुकड़े-टुकड़े हो गयी। परन्तु बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि कागज के छल्लों का कुछ भी नहीं बिगड़ा था।

इतने में हेमा उधर आयी और बोली : – वैसे तो पट्टी को छल्लों पर लटकाने की जरूरत नहीं है। वह किसी भी हालत में टूट जायेगी। इतना कहकर उसने एक और लकड़ी की लम्बी पट्टी ली और उसे बायें हाथ से ऊपर फेंक दिया। दायें हाथ से उसने मोटा डंडा पकड़कर हवा में पट्टी पर चोट मारी। चट की आवाज के साथ उस पट्टी के दो टुकड़े हो गये। – ऐसा क्यों हुआ? – हेमा ने पूछा।

बच्चे सोचने लगे। पर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि पट्टी क्यों टूट गयी। हेमा ने बताया – जब डंडे ने पट्टी पर चोट मारी तो

चोट के कारण वह बीच में एकाएक आगे निकल गयी परन्तु जड़त्व के कारण पट्टी के दोनों सिरे अपनी ही जगह स्थिर रहे। इसके नतीजे के तौर पर पट्टी इतनी अधिक मुड़ गयी कि उसका टूट जाना अनिवार्य हो गया था।

इधर मोहन ने भी एक नया जादू सोच निकाला।

3

जादू नम्बर 3 – मोहन ने अपनी हथेली पर एक पोस्टकार्ड रखकर उसके ऊपर एक सिक्का रख दिया। इसके बाद उसने कार्ड को उँगली से धकेला। पोस्टकार्ड हथेली से उड़कर जमीन पर गिर पड़ा परन्तु उसके ऊपर रखा सिक्का अपनी जगह से नहीं हिला। मोहन ने कितना मजेदार जादू दिखाया।

सारी शाम बच्चे अपने मित्रों को इस प्रकार के जादू दिखाते रहे और उन्होंने एक कविता भी बना डाली :

''चीजें होती हैं जिद्दी इस दुनिया में,
चीजें होती हैं आलसी इस दुनिया में,
चीजें होती हैं जिद्दी इस दुनिया में,
जड़त्व कहते हैं इस जिद को इस दुनिया में।''

जादू करते समय ये सावधानियां आवश्यक हैं :

जादू नं. 1 करते समय अगर बाट न मिले तो किसी भी दूसरी भारी चीज से काम चलाया जा सकता है, उदाहरण के लिए, हथौड़ी से। इस जादू की सफलता सर्वप्रथम इस बात पर निर्भर करती है कि धागा तोड़ते समय हाथ को तेज झटके से चलाना है। इसके अतिरिक्त इस बात का भी ख्याल रखना है कि ऊपर वाला पतला धागा, जिससे बाट या हथौड़ी लटक रही है, इतना मजबूत जरूर होना चाहिए कि खुद बाट या हथौड़ी के बोझ को सँभाल रखे। इस प्रयोग के लिए इसका अभ्यास करना होगा। अभ्यास के दौरान ही तुम धागे की आवश्यक मोटाई निश्चित कर पाओगे और तुम्हारा हाथ भी इसके लिए अभ्यस्त हो जायेगा। जब यह प्रयोग तुम कर रहे हो तो इस बात का ख्याल रखना कि तुम हाथ आगे बढ़ाकर ही धागे को खींचाके। ऐसा इसलिए करते हैं कि अगर प्रयोग असफल रहे और पतला धागा टूट जाये तो बाट तुम्हारे पैर पर न गिरे।

जादू नं. 2 करने के लिए चीड़ की लकड़ी की बनी 5 मि. मी. मोटाई वाली पट्टी का प्रयोग करो तथा उसको तोड़ने के लिए 1-2 से.मी. मोटे डंडे का इस्तेमाल करो। कागज के छल्लों की मोटाई और चौड़ाई कितनी भी रखी जा सकती है क्योंकि पट्टी उनके बिना भी टूट जाती है। पिछले प्रयोग की भाँति इस बात का जरूर ध्यान रखना है कि छल्ले पट्टी के बोझ को बर्दाश्त करें। इसके लिए अपनी कॉपी के एक पन्ने से 1 से.मी. चौड़ी कागज की पट्टियाँ काटकर छल्ले बना सकते हो। यह मत भूलना कि प्रयोग की सफलता तेज झटके पर निर्भर करती है।

तीसरा और अन्तिम प्रयोग अति सरल है।

यहां तो कोई जादू की छड़ी भी नहीं है। तब भी जादू करके लोगों को चकित कर देना कितना आसान है! इसके लिए सिर्फ यह समझना जरूरी होता है कि यह किसी चमत्कार से नहीं नहीं बल्कि विज्ञान के नियमों से चलता है। बस तुम्हें इन नियमों को समझना और थोड़ा अभ्यास करना होगा! और लो तुम भी बन गये जादूगर!

कोंपल

जानकारी

एक अनगिनत सदस्योंवाला परिवार

गुलाब के पौधों पर आराम फरमानेवाले जूं की तरह का कीट कभी देखा है तुमने? गुलाब और अन्य झाड़ियों की नाजुक टहनियों पर इनका बसेरा होता है। इनकी संख्या इतनी तेजी से बढ़ती है कि तुम चकित रह जाओगे। आज किसी टहनी या पत्ती पर तुम एक माहू या कीट पाओगे तो कुछ दिनों के बाद देखोगे कि उसे अनेक नन्हें नन्हें कीटों ने घेर रखा है, ये उसके बच्चे हैं। उनकी तादाद कितनी है? दस, बीस, सौ, हजार! अगर ये दस ही होते तो क्या होता? क्या इनकी प्रजाति बची रह पाती? शायद नहीं! और तब कई जीवों के जीवनक्रम की समूची व्यवस्था में ही गड़बड़झाला पैदा हो गया होता। सो प्रकृति के नियम से इनकी संख्या बहुत तेज़ रफ्तार से बढ़ती है। दोगुनी या चारगुनी नहीं इन कीटों के बढ़ने की रफ्तार दसगुनी होती है। एक माहू जैसे कीट का अगर एक ही बच्चा कीट होता या दो भी हो जाते तो इनकी आबादी बढ़ती जरूर परन्तु जरा सोचो, इनकी आबादी तो एक के दस और फिर दसों में हर एक के दस के हिसाब से बढ़ती है। यदि इनके वंश की वृद्धि इसी तरह होती रहती तो अब तक जमीन पर गेहूं के बालियों जितनी ऊंचाई तक ये पूरी पृथ्वी पर ही बिछ गये होते। लेकिन इनकी जिन्दगी की डोर इनके दुश्मनों के हाथों में होती है जो आकार प्रकार में तो छोटे और साधारण होते है लेकिन प्रकृति और चरित्र से ये उन माहू जैसे कीटों के लिये भयंकर साबित होते हैं। अपने दुश्मनों के सामने ये बिचारे कमजोर और असहाय होते हैं। इनके पास उनसे बचने का कोई उपाय नहीं होता। प्रकृति ने तमाम जीव जन्तुओं को अपने शत्रुओं से निपटने की अक्ल और तरीका दे रखा है। कोई तेज भाग कर उनसे बच जाता है तो कोई बदबूदार गंध फैलाकर या जहरीला द्रव छोड़कर दुश्मन के हाथों से बच निकलता है लेकिन इन्हें आत्मरक्षा का कोई साधन नहीं मिला होता। उन पर हमेशा मौत का साया मंडराया करता है जब कि ये खुद उससे अनजान रहते हैं। अपने दुश्मनों के रोज के 'मेनू' में ये उनके सबसे पसन्दीदा 'डिश' होते हैं। कोई नन्हीं सी चिड़िया अण्डे का खोल तोड़कर अपने घोंसले से अभी बाहर निकली नहीं कि उसकी तेज निगाहें यदि माहूओं वाली टहनी ढूंढ लेती हैं। फिर तो वह एक बार में दस बीस नहीं बल्कि सैकड़ों माहूओं को चट कर जायेगी। ये उसके लिए खाने के पहले लिया जानेवाला एपीटाइजर (भूख बढ़ानेवाला) जैसे होते हैं। और टहनियों पर रेंगनेवाला कोई कीड़ा कहीं उन तक पहुंच गया तब तो उनकी खैर नहीं। क्योंकि इन लालची कीड़ों के ये मुख्य आहार होते हैं। इन्हीं में से एक है हरे रंगवाली भुक्खड़ इल्ली। इसकी पीठ पर सफेद धारियां होती है। यह तो सिर्फ तुम्हारे पहचान के लिए हैं

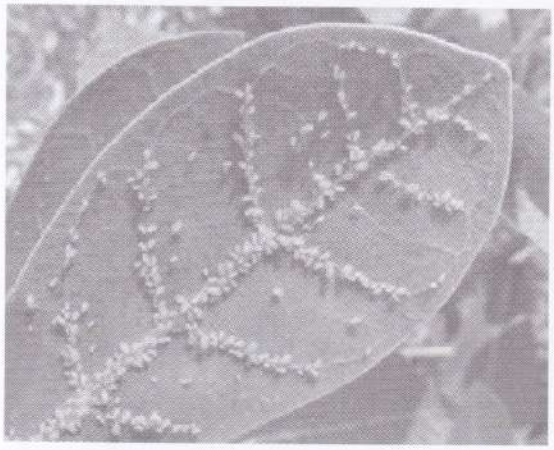

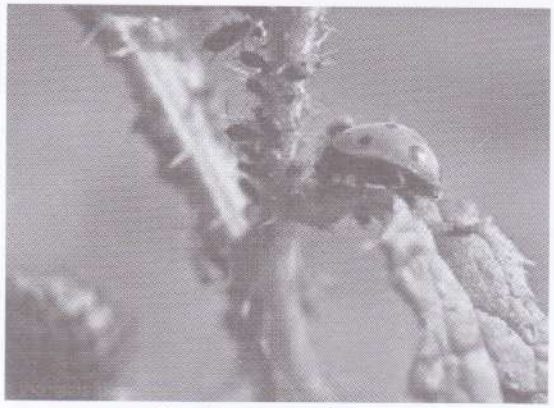

लाल चित्तीदार गुबरैला

क्योंकि इनका शिकार बन जानेवाले इन जूं जैसे कीटों को अपने किसी दुश्मन या खतरे की समझ ही नहीं होती। इन्हें यह नहीं पता है कि ये इल्लियां इनकी भयंकर दुश्मन होती हैं। इनकी जमात में घुसकर ये इनपर घात करती हैं। इनका आकार पीछे की तरफ फूला होता है और आगे हल्के से नुकीले मुंह तक चला जाता है। जब ये अपने आप को दोहरा कर लेती हैं तो ओस की लटकी बूंद की तरह दिखाई देती हैं। ये एकबारगी जब माहूओं के झुण्ड में घुस जातीं तो तबाही मचा देती हैं। वह अपने नुकीले मुंह से किसी हट्ठे-कट्ठे माहू को जकड़ लेती हैं, उसे जिन्दा ही चूस जाती और झिल्ली छोड़ देती। एक बार फिर उसका नुकीला मुंह उस झुण्ड में घुसता, एक दूसरा माहू पत्ती से खींचकर चूस लिया जाता और उसकी झिल्लीनुमा चमड़ी फेंक दी जाती। फिर तीसरे के साथ भी यही होता और फिर चौथा, पांचवां.....बीसवां.....सौवां.....और न जाने कितने इस तरह मौत के मुंह में समा जाते। इन बुद्धुओं की संख्या कम होती जाती पर इस बात का जैसे इन्हें ख्याल ही नहीं रहता कि इनके साथ क्या घट रहा है और जल्दी ही इनकी भी सांसों की लड़ी टूटनेवाली है। मौत इनके सिर पर मंडरा रही होती है लेकिन वे इससे एकदम अनजान ही रहते हैं। इल्ली के नुकीले मुंह में फंसा कोई माहू जब छूटने के लिए छटपटाता है तो झुण्ड के बाकी जूएं जैसे ये कीट इतनी शान्ति और तल्लीनता के साथ अपना पेट भरने में लगे होते हैं जैसे वहां सब कुछ ठीक चल रहा हो। उनके लिए तो मानो ऐसी कोई चीज हो ही नहीं सकती थी जो खुद उनके खाने में विघ्न पैदा कर सके। यह कितनी अजीब बात लगती है कि इस संकट की घड़ी में भी वे तबतक पौधे का रस चूसते रहते जब तक खुद न चूस लिये जाते। वह लालची इल्ली इन्हीं के बीच घूमती रहती, क्योंकि उसका खाया-पिया जल्दी ही हजम हो जाता और उसकी लालची नजरें अपने शिकार पर फिर टिक जातीं। दो हफ़्तों तक इस तरह ठूंस-ठूंसकर पेट भरने के बाद वह एक व्याध पतंगे या ड्रैगन फ्लाई में बदल जाती।

इनके दुश्मनों की कतार में एक तरह का गुबरैला भी शामिल है। देखने में यह गोल मटोल सा लाल रंग का होता है जिसके पीठ पर काली गोल चित्तियां होती हैं। कौन कह सकता है यह मासूम सा दिखनेवाला जीव माहू जैसे कीटों को भकोस जाता होगा! सच पूछा जाये तो ये इन गुबरैलों का रोज का आहार हैं।

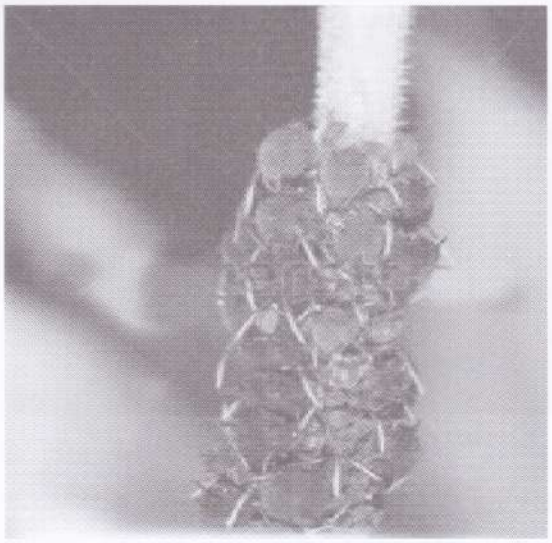

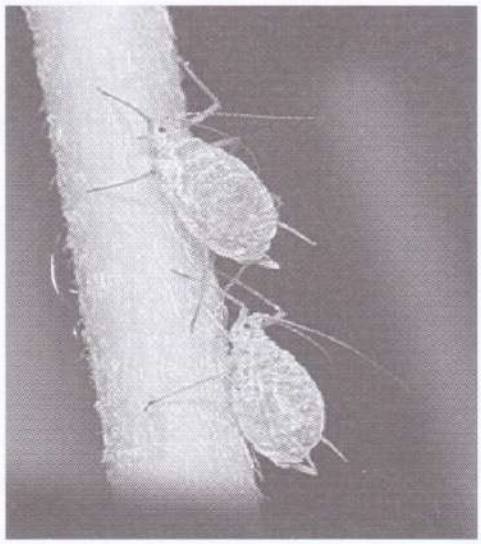

डंठलों पर जुएं जैसे कीट

इन माहूओं की जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं रहता। तमाम तरह के कीटों और इल्लियों से लेकर कीटभक्षी पक्षी तक इनकी ताक में रहते हैं और बिना किसी मेहनत के बड़ी आसानी से इन्हें अपना भोजन बना लेते हैं। इनकी भारी आबादी मारी जाती है, फिर भी इन माहू जैसे कीटों की प्रजाति आख़िर बची कैसे रह गयी। इनके पास अपना वंश बढ़ाने का ऐसा ढंग है जो और किसी कीट में नहीं पाया जाता। अण्डे की जगह ये नन्हें माहू पैदा करते हैं और वे सब के सब दो सप्ताह में पूरी तरह विकसित होकर अगली पीढ़ी को जन्म देने लगते हैं और यह सिलसिला पूरे मौसम यानी 6 माह तक लगातार चलता रहता है।

इसे यूं समझते हैं। मान लो एक माहू 10 बच्चे पैदा करती है, अब इनमें से हर एक 10-10 और बच्चों को जन्म देती है यानी कुल 100! इन सौ के फिर दस-दस बच्चे होते हैं, उनकी संख्या हुई 1000! इसी तरह यह संख्या दसगुनी रफ्तार से बढ़ती है। यदि 6 महीने के दौरान पैदा होते जानेवाले उसके उत्तराधिकारियों को गिने तो उन 6 महीने में ही इनकी तादाद इतनी बढ़ जाती है कि उन्हें गिनने में 10 हजार साल लग जायेंगे। अब जरा यह देखें कि 6 माह के दरमियान माहूओं से भरी किसी शाखा के निवासियों को, जहां वे एक दूसरे से बिल्कुल कस कर सटे हुए हों, किसी और जगह बसाना हो तो कितनी जगह की आवश्यकता होगी। क्या 100 मीटर लम्बे और 100 मीटर चौड़े क्षेत्रफलवाली कोई जगह काफी होगी? बिल्कुल नहीं, इसके लिए इससे दसगुनी बड़ी जगह की जरूरत होगी यानी 10 हेक्टेयर की जमीन। जाहिर है इनके सारे शत्रु मिलकर भी इनका पूरी तरह सफाया नहीं कर सकते। ये कमजोर होते हैं और मजेदार बात तो यह है कि अपने दुश्मनों के हाथों तबाही झेलनेवाली यह प्रजाति शक्तिशाली मनुष्य को तबाह करने की ताकत भी रखती है। खेतों में लहलहाती फसलों को ये पूरे का पूरा बर्बाद कर सकते हैं।

इतिहास के पन्नों से

हिरोशिमा और नागासाकी जब जल उठा

6 अगस्त 1945 का दिन, समय सुबह के 8 बजकर 15 मिनट। जापान की राजधानी तोक्यो से लगभग 500 मील दूर एक शहर हिरोशिमा। अचानक वह दहल उठा। चीख पुकार से सारा शहर थर्राने लगा। मजबूत इमारतें ताश के पत्तों की तरह भरभरा कर गिरने लगीं। सड़कें जले और अधजले शरीरों से पटने लगीं। उसमें बच्चे, बूढ़े, नौजवान सभी थे। हिरोशिमा पर अमेरिका ने परमाणु बम गिराया था। उस समय दूसरा विश्व युद्ध चल रहा था। यानी एक ऐसा युद्ध छिड़ा हुआ था जिसमें दुनिया के लगभग सभी देश किसी न किसी रूप में लड़ रहे थे। इसकी शुरुआत 1939 में हुई थी और 1945 तक यह लड़ाई चली थी। इसमें दो प्रमुख गुट थे सभी देश इसमें किसी एक या दूसरे गुट में शामिल थे। एक गुट था धुरी राष्ट्र जिसमें मुख्य देश थे जर्मनी, इटली और जापान और दूसरा गुट था मित्र राष्ट्र जिसमें अग्रणी देश थे फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका। अन्य देश इन्हीं दोनों गुटों में बंटे हुए थे। यह युद्ध इसलिए लड़ा जा रहा था ताकि ताकतवर देश कमजोर देशों को आपस में बांट लें और उनपर इस तरह अधिकार कर लें कि अपने देश में पैदा होनेवाले सामान को इन कमजोर देशों में बेच सकें और सारा पैसा अपने देश ले जा सकें। इस तरह वे और मजबूत और धनी होना चाहते थे। 1914 से लेकर 1918 तक पहला विश्वयुद्ध भी इसीलिए लड़ा गया था। दूसरे विश्व युद्ध तक कुछ दूसरे देश अब पहले विश्वयुद्ध वाले देशों के मुकाबले ज्यादा मजबूत हो चुके थे। इसलिए अब वह फिर से बंटवारा करना चाहते थे। दूसरे विश्वयुद्ध के समय जापान का चीन पर कब्जा था, हालांकि वह पूरी तरीके से नहीं था। जर्मनी में उस समय हिटलर की नाजी पार्टी बहुत शक्तिशाली बन चुकी थी और हिटलर चेकास्लोवाकिया पर कब्जा जमाना चाहता था। यही नहीं वह पूरा दुनिया पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। अगर वह अपने मकसद में कामयाब हो जाता तो मानव जाति को बहुत बड़ी तबाही देखनी पड़ती। लेकिन जर्मनी को रोकने के लिए मित्र राष्ट्र के साथ जब रूस ने भी मोर्चा सम्हाला तो 1945 के अन्त तक आते आते धुरी राष्ट्र की हालत पतली होने लगी थी। जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन जापान अभी अत्मसमर्पण करने के लिए तैयार नहीं थ। बाद में यह बात बिल्कुल साफ हो चुकी थी कि दो चार माह बीतते न बीतते वह भी आत्म समर्पण कर देता। मित्र देशों के प्रधान कमाण्डर आइजेनहोवर ने भी कहा था कि परिस्थिति ऐसी थी कि जापान को आत्मसमर्पण करना ही पड़ता इसलिए

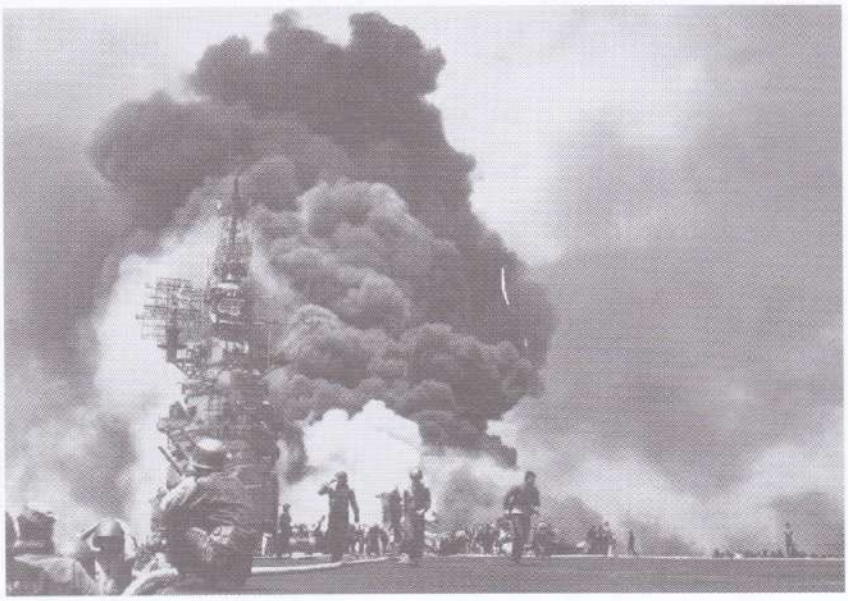

बम के प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं। लेकिन अमेरिका ने इन्तजार नहीं किया। जब कि युद्ध समाप्त ही हो रहा था उसने जापान पर शक्तिशाली बम गिरा दिया। उसने यह कहकर सफाई दी कि वह युद्ध खत्म करना चाहता था। लेकिन यह बिल्कुल झूठ बात थी। इसके लिए उसे परमाणु बम गिराने की क्या जरूरत पड़ गई और वह भी सेना वाले इलाके को नहीं बल्कि जापानी जनता पर निशाना साधा गया। बम गिराने का आदेश अमेरिका के राष्ट्रपति हैरी ट्रूमन ने दिया था। पहला बम था यूरेनियम-235 जिसे हिरोशिमा पर पैराशूट से गिराया गया। इस बम को अपने पतले और छोटे आकार के चलते 'छोटा बच्चा' कहा गया। पर इसने भयानक तबाही मचायी। यह जमीन से 2000 फीट की ऊंचाई पर फटा। जानते हो इसके बाद क्या हुआ। शहर के 5 वर्गमील क्षेत्रफल में कुछ नहीं बचा सब कुछ बर्बाद हो गया था। इसमें 90 प्रतिशत लोग मारे गये। 80,000 लोग तो तुरन्त काल के गाल में समा गये। हजारों लाख लोग विकिरण के असर से उसके बाद भी धीमी मौत मरते रहे। उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे कई बीमारियां लेकर पैदा हुए। चमड़ी के कैंसर, अन्धापन, और टेढ़े मेढ़े अंगोंवाले ये बच्चे याद दिलाते हैं कि विज्ञान का प्रयोग मानवजाति की भलाई के लिए नहीं केवल कुछ लोगों के फायदे के लिए होता है। इसके तीन दिन बाद ही 9 अगस्त 1945 को जापान के एक दूसरे शहर नागासाकी पर बम गिराया गया। यह यूरेनियम से अधिक शक्तिशाली प्लूटोनियम बम था और इसे 'मोटा आदमी' नाम दिया गया था। यह यूरेनियम बम के मुकाबले ज्यादा तबाही ला सकता था। लेकिन नागासाकी पहाड़ियों से घिरा हुआ था। इसलिए इसका असर इतना व्यापक नहीं हुआ। उराकामी घाटी और नागासाकी के एक हिस्से तक इसका प्रभाव रहा। फिर भी 40,000 से ज्यादा लोगों की मौत तुरन्त हो गई। और विकिरण का खतरनाक असर बाद में भी लोगों को मौत के मुंह में धकेलता रहा। रेडियशन का असर कितनी दूर तक और कितने लंबे समय तक रहता है, यह तो तुम जानते ही

हो!

दूसरे विश्वयुद्ध में अमेरिका अपनी ताकत दिखाना चाहता था। क्रान्ति के बाद रूस का विकास बहुत तेजी से हो रहा था और ताकत में वह अमेरिका को टक्कर दे रहा था। इसलिए अमेरिका के लिए यह जरूरी हो गया था कि वह अपने को सबके ऊपर और सबसे शक्तिशाली दिखाये। उसने बिना किसी जरूरत के परमाणु बम का प्रयोग करके अपनी ताकत दिखाई। इसका एक दूसरा कारण यह भी था वह इसका परीक्षण करके वह इसका असर देखना चाहता था इसलिए जब जापान ने जर्मनी के समर्पण के बाद भी आत्मसमर्पण करने को तैयार नहीं हुआ तो उसे बम गिराने का मौका मिल गया। यह सच है कि जापान कमजोर देशों को अपनी मुट्ठी में रखने के लिए नाजी जर्मनी के साथ मिलकर लड़ रहा था लेकिन इसमें जापान की जनता का क्या दोष था। अमेरिका ने चुन कर ऐसे शहरों पर बम गिराया जहां सेना की कोई टुकड़ी नहीं थी बल्कि आम नागरिक थे। इसमें सैकड़ों बच्चे मारे गये जो बचे उनकी जिन्दगी मौत से भी बुरी थी। इससे अमेरिका के गंदे इरादे का पता चलता है। बाद के दिनों में भी अमेरिका ने कई देशों पर युद्ध थोपा और उन्हें बर्बाद कर दिया। ऐसे खूनी खेल बच्चों के लिए हमेशा बहुत बेरहम मौतें लाते।

युद्ध इतना भयावह था और बच्चों की मौत इतनी तकलीफ देह थी कि कलेजा मुंह को आ जाये। तुर्की के कवि नाजिम हिकमत की यह दिल छू लेनेवाली कविता एक सात साल की बच्ची और उस जैसे कई बच्चों के बारे में हैं जो लड़ाई में मारे जा चुके हैं

नन्ही लड़की

दरवाज़े पर मैं आपके
दस्तक दे रही हूँ।
कितने ही द्वार खटखटाए हैं मैंने
किन्तु देख सकता है कौन मुझे
मरे हुओं को कोई कैसे देख सकता है

मैं मरी हिरोशिमा में
दस वर्ष पहले
मैं थी सात बरस की
आज भी हूँ सात बरस की
मरे हुए बच्चों की आयु नहीं बढ़ती

पहले मेरे बाल झुलसे
फिर मेरी आँखे जलीं
राख की ढेरी बन गई मैं
हवा जिसे फूँक मार उड़ा देती है

अपने लिए मेरी कोई कामना नही
मैं जो राख हो चुकी हूँ
जो मीठा तक नहीं खा सकती।

मैं आपके दरवाज़ों पर
दस्तक दे रही हूँ
मुझे आपके हस्ताक्षर लेने हैं
ओ मेरे चाचा! ताऊ!
ओ मेरी चाची! ताई!
ताकि फिर बच्चे इस तरह न जलें
ताकि फिर वे कुछ मीठा खा सकें।

नाज़िम हिकमत

जापानी कहानी

वफादार हाथी

युकियो थुचिया

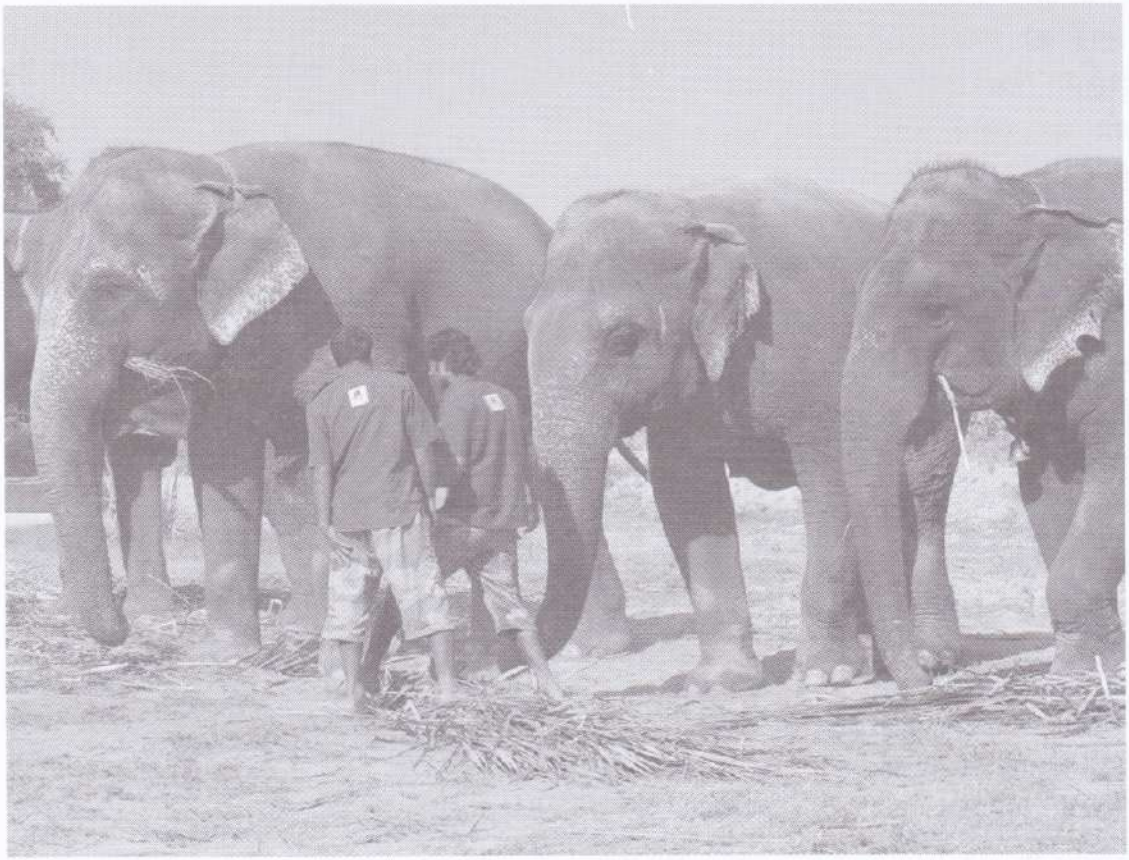

जापान के यूनो चिड़ियाघर में तमाम चेरी के पेड़ थे। इस मौसम में सभी चेरी के पेड़ मनमोहक गुलाबी रंग के फूलों से लदे थे। फूलों की पंखुड़ियां धूप में चमक रहीं थी। आज छुट्टी का दिन था और इस सुहाने दिन चिड़ियाघर में आने वालों की काफी भीड़ थी। अंदर दो विशालकाय हाथी, दर्शकों के मनोरंजन के लिए कुछ करतब दिखा रहे थे। यह हाथी भारी भरकम लकड़ी के तख्तों पर संतुलन बनाए खड़े थे और अपनी लंबी सूंड से भोंपू बजा रहे थे।

इस जगह से थोड़ी सी दूर पर पत्थर की कब्र बनी थी। यह स्मारक उन जानवरों की याद में बनाया गया था जो कि टोक्यो के यूनो चिड़ियाघर में मारे गए थे। आम दर्शकों की निगाहें इस स्मारक पर जाती ही नहीं थीं।

एक दिन जब मैं चिड़ियाघर गया तो वहां एक आदमी इस पत्थर के स्मारक को बहुत प्यार से पॉलिश कर रहा था। उसने ही मुझे उन तीन

हाथियों की कहानी सुनाई जिन्हें वहां दफनाया गया था। आज हमारे चिड़ियाघर में दर्शकों के मनोरंजन के लिए तीन हाथी हैं। परंतु बहुत साल पहले भी यहां पर तीन हाथी थे। उनके नाम थे जॉन, टौंकी और वैनली। उस समय दूसरा महायुद्ध चल रहा था। जापान इस लड़ाई में शामिल था।

जापान में रोज ही कहीं-न-कहीं बम के गोलों की बारिश जरूर होती थी। अगर कोई बम चिड़ियाघर पर गिरता तो न जाने क्या आफत आती? तब जानवरों के पिंजड़े टूट जाते और सब खतरनाक जानवर भागकर शहर में घुस जाते। फिर तो एकदम आतंक मच जाता। इस आफ़त से बचने के लिए सेना ने सारे जानवरों को जहर खिलाकर मार देने का आदेश दिया। धीरे-धीरे, सभी शेरों, चीतों, तेंदुओं, भालुओं और बड़े सांपों को जहर खिला कर मौत की नींद सुला दिया गया। तीन बड़े हाथी बच गए। अंत में इन्हें मारने की तैयारी हुई। सबसे पहले जॉन को मारने की कोशिश की गई।

जॉन को आलू बेहद पसंद थे। इसलिए चिड़ियाघर के रखवालों ने जॉन के खाने वाले आलुओं में से कुछ में जहर मिला दिया। जॉन एक बहुत ही होशियार हाथी था। उसने चुन-चुन कर अच्छे-अच्छे आलू तो खा लिए। परंतु जहरीले आलुओं को उसने, एक-एक करके अलग फेंक दिया।

'अब और कोई चारा नहीं बचा,' चिड़ियाघर के अधिकारियों ने कहा, 'अब हमें जॉन के शरीर में सीधे इंजेक्शन के जरिए ही जहर घुसाना होगा।' फिर एक मोटी सी इंजेक्शन की सुई - जिसका इस्तेमाल घोड़ों को टीका लगाने के लिए किया जाता है - में जहर भरा गया। परंतु, जॉन की चमड़ी इतनी मोटी थी कि सुई उसकी चमड़ी में घुसी ही नहीं और 'चट्ट' करके टूट गई। जब जहर की सुई भी फेल हो गई तो अंत में चिड़ियाघर के अधिकारियों ने जॉन को भूखा मारने की सोची। बेचारा जॉन, सत्रह दिनों तक भूख-प्यास से तड़पता रहा और अंत में चल बसा।

उसके बाद टौंकी और वैनली को मारने की बारी आई। दोनों ने हमेशा ही लोगों को अपनी प्यार भरी आंखों से देखा था। भीमकाय शरीर होने के बावजूद वे बड़े शांत और अच्छे दिल के थे। चिड़ियाघर के अधिकारी इन हाथियों को बहुत चाहते

थे। उन्होंने इन दोनों हाथियों को टोक्यो के उत्तर में स्थित सेंडाई नाम के चिड़ियाघर में भेजने की बात भी सोची। परंतु अगर सेंडाई में भी बम बरसे तो? अगर वहां भी ये जानवर चिड़ियाघर से भागकर शहर में घुस गए तो? ऐसी स्थिति में क्या होगा?

अंत में बाकी जानवरों की तरह ही टौंकी और वैनली को भी यूनो चिड़ियाघर में ही मारने का निर्णय लिया गया।

चिड़ियाघर के अधिकारियों ने टौंकी और वैनली का खाना-पीना बंद कर दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए दोनों हाथी खाने के अभाव में पतले और कमजोर होते गए। जब कभी भी कोई चिड़ियाघर का कर्मचारी उनके पिंजड़े के पास से गुजरता वे

दोनों अपने पिछले दोनों पांवों पर खड़े हो जाते - जैसे कि वे विनती कर रहे हों, 'हमने क्या गुनाह किया है! कृपा करके हमें कुछ तो खाने को दो!' भूख के मारे उनका चेहरा अब सिकुड़ गया था। उनकी प्यारी आंखें अब रबड़ की छोटी गेंदों जैसी लगने लगीं थीं। सिकुड़े

शरीर के अनुपात में, अब उनके कान बहुत बड़े लगने लगे थे। जंगल के इन ताकतवर बादशाहों की हालत अब इतनी दयनीय हो गई थी कि उन्हें देखते नहीं बनता था।

उन दोनों हाथियों का प्रशिक्षक और महावत उन्हें अपने बच्चों से भी ज्यादा प्यार करता था। वो दिन भर पिंजड़े के सामने खड़ा रहता और अपनी तकदीर को कोसता, 'कितने दुखी हो तुम मेरे दोस्तों! तुम्हारी हालत मुझ से देखी नहीं जाती!'

एक दिन टौंकी और वैनली ने अपने भारी-भरकम शरीर को पूरी ताकत लगाकर ऊपर उठाया और सूंड को हवा में लहराया।

पहले, जब भी वे इस तरह का कोई करतब दिखाते तो महावत उनको ईनाम में जरूर कुछ खाने-पीने को देता था। उन्हें इस बार भी कुछ ईनाम पाने की उम्मीद थी। महावत ने जब यह देखा तो उससे नहीं रहा गया। उसने बहुत दुख बर्दाश्त किया था। 'मेरे टौंकी! मेरे वैनली!' वो चिल्लाया और दौड़ कर खानेवाले गोदाम में गया। जब वह लौटा तो उसके एक हाथ में खाने की टोकरी थी और दूसरे हाथ में पानी की बाल्टी। उसने यह खाना और पानी टौंकी और वैनली के सामने लाकर रख दिया। 'जितना मर्जी चाहे खाओ और जम कर पानी पिओ और दोस्तो ...' कहते-कहते महावत उन हाथियों के पतले पैरों से लिपट कर रोने लगा। महावत ने जो कुछ भी किया उसे चिड़ियाघर के बाकी अधिकारियों ने एकदम अनदेखा कर दिया। किसी ने महावत से एक शब्द भी नहीं कहा। चिड़ियाघर के डायरेक्टर साहब भी बस अपने होंठ काटते रहे और टकटकी लगाए अपनी मेज को घूरते रहे। किसी को भी हाथियों को खाना देने की इजाजत नहीं थी। चिड़ियाघर का हरेक सदस्य बस यही आस लगाए था और यही प्रार्थना कर रहा था कि काश हाथी एक और दिन जिंदा रह जाएं। शायद अगले दिन युद्ध समाप्त हो जाए और इन प्यारे हाथियों की जान बच जाए।

एक दिन ऐसा आया जब कमजोरी के कारण टौंकी और वैनली ने हिलना-डुलना भी बंद कर दिया। वे बस एक ओर करवट करके

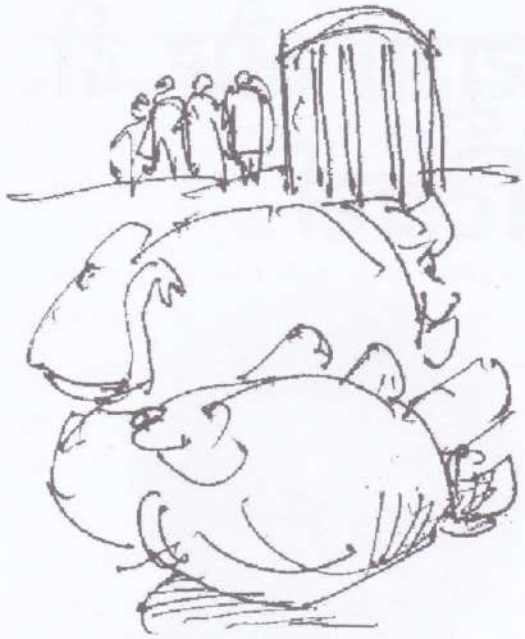

लेट गए। चिड़ियाघर के आसमान पर तैरते सफेद बादलों को वे अब अपनी आंखों से नहीं देख पा रहे थे। वैसे उनकी प्यारी आंखें, अब पहले से कहीं अधिक साफ और खूबसूरत नजर आ रही थीं। अपने अजीज दोस्तों को इस प्रकार तिल-तिल करके मरता हुआ देखकर महावत का कलेजा फटा जा रहा था। उसे लगा कि अब वो इस दहशत भरे नजारे को और ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। चिड़ियाघर की देखभाल करने वाले बाकी सभी लोगों को भी ऐसा ही लग रहा था। अब सभी ने हाथियों के पिंजड़े के पास जाना बंद कर दिया था।

दो हफ्ते बाद टौंकी और वैनली मर गए। मरते समय दोनों के शरीर पिंजड़े के सींखचों से सटे थे और उनकी सूंडें सींखचों से बाहर हवा में लटकी थीं। वे शायद आखरी बार अपनी सूंड को ऊपर उछाल कर हवाई करतब दिखाना चाहते थे। वे उन लोगों का मनोरंजन करना चाहते थे जिन्होंने उन्हें कभी खाना खिलाया था।

'हाथी मर गए हैं! दोनों हाथी मर गए हैं!' महावत कमरे में चिल्लाते हुए दौड़ा। वह अपने सिर को दोनों हाथों से थाम कर फूट-फूट कर रोने लगा और गुस्से में अपने पैरों को पटकने लगा। चिड़ियाघर के बाकी लोग अब दौड़ कर हाथियों के पिंजड़े के अंदर गए। उन्होंने टौंकी और वैनली के कमजोर और पतले शरीर को जोर-जोर से हिलाया जैसे कि उन्हें गहरी नींद से उठाने का प्रयास कर रहे हों। फिर सभी के सभी रोने लगे और दोनों हाथियों के पैरों और सूंडों को प्यार से सहलाने लगे। चमकीले नीले आकाश में दुश्मन के जंगी जहाज तेजी से उड़ान भरने लगे। एक बार फिर से टोक्यो पर बमों की बारिश शुरू हो गई। हाथियों से लिपटे हुए महावत और चिड़ियाघर के रखवालों ने अपनी मुट्ठियों को भींच कर आसमान की ओर उठाया और प्रार्थना की, 'युद्ध बंद करो! सभी युद्ध बंद करो!'

बाद में जब उन हाथियों के शरीर का मुआयना किया गया तो उनके विशालकाय पेट में कुछ भी नहीं मिला - उसमें पानी की एक बूंद भी नहीं थी।

जब उस चिड़ियाघर के रखवाले ने यह कहानी खत्म की तो उसकी आंखों में आंसू थे, 'वे तीन हाथी अब शांति से इस स्मारक के नीचे लेटे हैं।'

वह प्यार से उस पत्थर के स्मारक को साफ कर रहा था और ऊपर से चेरी के फूल बरस रहे थे।

अनुवादः अरविन्द गुप्ता

विश्वविख्यात फ्रांसीसी साहित्यकार

अलेक्जेण्डर ड्यूमा और दी थ्री मस्केटियर्स

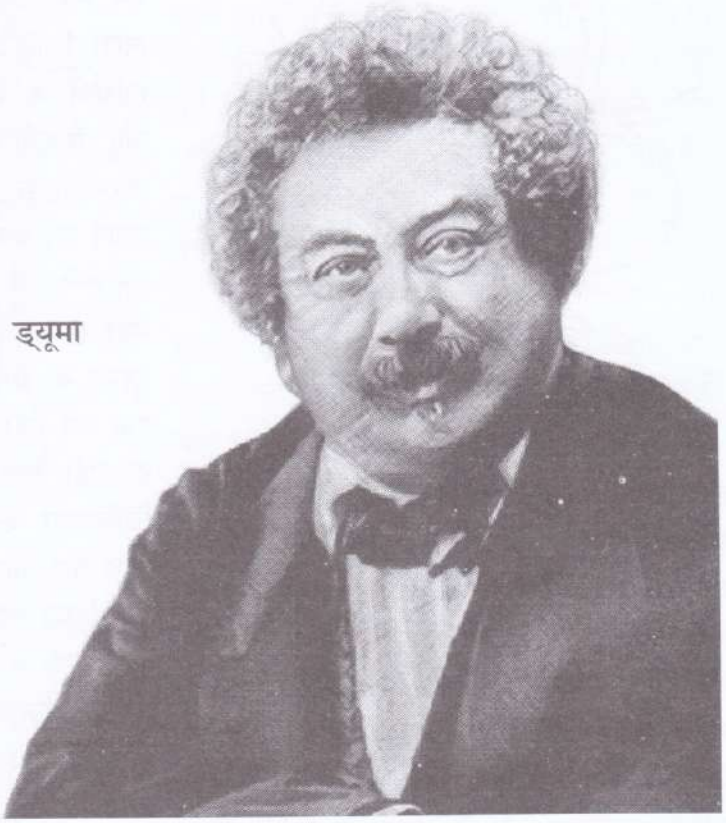

अलेक्जेण्डर ड्यूमा

अलेक्जेण्डर ड्यूमा फ्रांस के विख्यात लेखक थे। इनके उपन्यासों और कहानियों को पूरी दुनिया में बहुत चाव से पढ़ा जाता रहा है। इनकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इनकी कहानियों का 100 भाषाओं में अनुवाद हुआ। इनके उपन्यासों पर लगभग 200 फिल्में भी बनीं और खूब पसन्द की गईं। ड्यमा के अधिकतर उपन्यासों में इतिहास की पृष्ठभूमि मौजूद रहती है। जहां साहसिक और चुनौतीपूर्ण कारनामों के साथ गुंथी कहानी चलती रहती है और इतनी रोचक होती है कि एक बार शुरू करने पर पूरा खत्म किये बिना इसे छोड़ा नहीं जा सकता। इनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास 'दी थ्री मस्केटियर्स' और 'दी काउण्ट ऑफ मॉन्टे

क्रिस्टो' है। एक किताब के रूप में छपने के पहले ये उपन्यास एक धारावाहिक के रूप में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हए थे। इसके साथ उनकी और भी कई कहानियां जैसे कि 'विकॉम्ते ऑफ ब्रेजलॉन: टेन इयर्स लेटर' और 'ट्वेन्टी इयर्स आफ्टर' पहले धारावाहिक के तौर पर और फिर पुस्तक के आकार में छपीं। अलेक्जेण्डर पर अपने पिता थॉमस अलेक्जेण्डर की बहादुरी और न्यायप्रियता की स्पष्ट छाप थी। पिता थॉमस की मां यानी अलेक्जेण्डर की दादी एक गुलाम नीग्रो थीं और दादा फ्रांस के कुलीन घराने से आते थे। लेकिन अलेक्जण्डर के पिता ने अपने नाम के साथ पिता की जगह अपनी मां का उपनाम 'ड्यूमा' जोड़ा, जबकि काले लोगों या नीग्रो को नस्लीय भेद-भाव का शिकार होना पड़ता था और समाज में उनकी हैसियत को कम करके देखा जाता था। इस तरह का बर्ताव उन्हें भी झेलना पड़ा। फिर भी अलेक्जेण्डर ने अपने पिता की ही तरह अपने नाम के साथ अपने दादी का उपनाम ड्यूमा ही लगाया। उन्हें एक गुलाम काली औरत का वंशज माना गया। उनके पिता सेना में ऊंचे पद थे। वे जनरल थे और अलेक्जेण्डर भी बाद में सेना के विशेष दल 'मस्केटियर' में शमिल हो गये फिर भी उन्हें अक्सर ही रंगभेद का शिकार होना पडता। उनकी अफ्रीकी वंशावली को लेकर उनका मजाक उड़ाया जाता। लेकिन अपने पिता की ही तरह वह भी अडिग रहे। और इन बातों की उन्होंने जरा भी परवाह नहीं की। उल्टे ऐसे मौकों पर वे पलट कर व्यंग की ऐसी बाण छोड़ते कि सामनेवाला चारों खाने चित्त हो जाता। एक बार जब नीग्रोवाली बात को लेकर उनकी खिल्ली उड़ायी जा रही थी तो वे छूटते

दी थ्री मस्केटियर्स

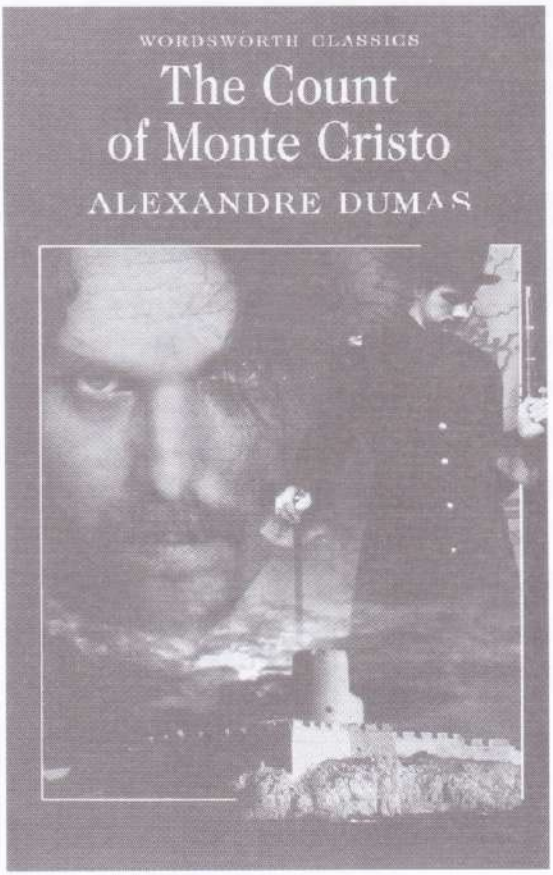

दी काउण्ट ऑफ मॉण्टे क्रिस्टो

ही तपाक से बोले- 'मेरे पिता एक मुलाट्टो (यानी गोरे पिता और काली मां की संतान) थे, मेरे दादा एक नीग्रो और मेरे पूर्वज परदादा एक बंदर थे। सो देखा तुमने, मेरा परिवार वहां से शुरू होता है जहां आकर तुम्हारा खत्म हो जाता है।' किसी से कुछ बोलते न बना। उनकी हाजिरजवाबी ने लोगों का मुंह बंद कर दिया था

उनमें मानवता के प्रति अगाध आस्था थी। वे स्वतंत्रता, बराबरी और भाईचारा के हिमायती थे। उनके पिता की शख्सियत और उनके जीवन ने अलेक्जेण्डर को इतने गहरे तक प्रभावित किया था कि उनके उपन्यासों के चरित्रों तक में उनके पिता की झलक साफ दिखाई पड़ती।

अलेक्जेण्डर ड्यूमा ने अपना उपन्यास थ्री मस्केटियर्स ऐसे समय लिखा जब फ्रांसीसी समाज में अन्याय, गैरबराबरी का बोलबाला था। पुराने ढंग के शासन से लोग वहां ऊब रहे थे। राजा के शासन के खिलाफ अन्दरूनी उथल-पुथल शुरू हो चुकी थी, षडयंत्र रचे जा रहे थे। राजाओं का शासन या राजतंत्र के बदले वहां गणतंत्र की भावना धीरे-धीरे जगह बनाने लगी थी। इन्हीं परिस्थितियों में उनका यह उपन्यास छपा। यह 1844 में एक धारावाहिक के रूप में छपना शुरू हुआ था। यानी 1848 की महान फ्रांसीसी क्रान्ति के ठीक 4 साल पहले। इस क्रान्ति के बाद वहां गणतंत्र की स्थापना हुई थी। अलेक्जेण्डर और उनके पिता दोनों ही अपने अपने समय में राजा के सैन्य दस्ते में शामिल थे। इसलिए वहां के जीवन से वह अच्छी तरह परिचित थे, अलेक्जेण्डर को यह पता था कि वहां शासन के कैसे-कैसे षडयन्त्र और भीतरी दांव पेंच चलते थे। इसलिए उनके उपन्यास के पात्र भी बनावटी नहीं बल्कि असली जैसे लगते थे। उसका मुख्य पात्र था, द'आर्तगान, जो अपना घर छोड़कर राजा के विशेष सैन्य दल में शामिल होने के लिए फ्रांस रवाना हुआ। इस दल के बहादुर और हिम्मती सैनिकों को मस्केटियर्स ऑफ गार्ड के नाम से जाना जाता था। वास्तव में मस्केटियर की पदवी तक पहुंचने के लिए बहुत निपुण, निर्भीक और पैतरेबाज होना जरूरी होता था। रास्ते में कुछ ऐसी परिस्थितियां बदलीं कि राजा के प्रथम मंत्री के हाथों उसका अपमान होता है। वह ठान लेता है कि अपने इस अपमान का बदला वह जरूर

लेगा। इसी प्रक्रिया में आथस, पार्थस और आरमिस नाम के तीन मस्केटियर्स उससे टकराते हैं। पहले उनमें झड़प होती है जो बाद में गहरी दोस्ती में बदल जाती है। वे इस एक उद्देश्य के साथ जीवन जीते हैं 'सभी एक के लिए, एक सबके लिए'। घटनाओं के उतार-चढ़ाव के बाद अन्त में आर्तगान अपना लक्ष्य पा लेता है। इसी कहानी को अलेक्जेण्डर 'विकॉम्ते ऑफ ब्रेजलॉन: टेन इयर्स लेटर' और ट्वेन्टी इयर्स आफ्टर' में आगे बढ़ाते हैं जो एक दूसरे से जुड़ी हैं लेकिन हर एक उपन्यास अपने आप में सम्पूर्ण भी है।

'दी काउण्ट ऑफ मॉन्टे क्रिस्टो' उनका एक और बढ़िया उपन्यास है। उसका नायक एडमण्ड दान्तेस एक बहादुर नाविक है। उसकी इमानदारी और कुशलता से प्रभावित होकर जहाज का मालिक उसे कप्तान बनाने की सोचता है लेकिन उसकी उन्नति से कुछ लोग जलने लगते हैं। उसके तीन विकट दुश्मन हैं। वे तरह-तरह के षडयंत्र रचकर और तिकड़म भिड़ाकर उसे ऐसे अपराधों में फंसा देते हैं जो उसने किया ही नहीं। उसे कैद की सजा हो जाती है। उसका मुकदमा लड़नेवाला सरकारी वकील उसका हमदर्द बन जाता है लेकिन कोशिश करके भी वह उसे छुड़ा नहीं पाता। इसी बीच शासन बदल जाता है और दान्तेस को भुला दिया जाता है। पनन्तु एडमण्ड अपने दुश्मनों को भुला नहीं पाता और उन्हें उनके किये की सजा देना चाहता है। इसके लिए उसका जेल से निकलना जरूरी होता है। वह किसी तरह कोशिश करके जेल में एक कैदी साथी की मदद से निकल जाता है और वापस आकर अपने तीनों दुश्मनों को ढूंढकर उन्हें पूरी तरह बर्बाद कर देता है। देखने में यह बिल्कुल एक सामान्य सी फिल्मी कहानी लग रही है लेकिन इस उपन्यास ने अलेक्जेण्डर को महान उपन्यासकारों की श्रेणी में ला बिठाया। मनुष्य की कमजोरी और तुच्छता, उसकी इमानदारी और हिम्मत, दुर्भाग्य और कठिनाइयों से लड़ने की उसकी जिद ये सारे भाव मनुष्य में एक साथ होते हैं। ड्यूमा ने अपने पात्रों के जरिये इसकस बहुत अच्छी तरह चित्रण किया है।

अलेक्जेण्डर ड्यूमा ने उपन्यास और कहानियां लिखने के पहले अपने लेखन की शुरुआत नाटकों से की थी। उपन्यास और नाटकों के अलावा उन्होंने यात्रा संस्मरण भी लिखे। वे अपने विचारों को लेकर अडिग थे। उनके लेखन में भी उनके विचारों की झलक मिलती। उन्हें अपने उपन्यास 'दी फेंसिंग मास्टर' के लिए रूस के जार द्वारा प्रतिबंधित भी कर दिया गया था। जार को उनका उपन्यास खतरनाक लगा जो सीधे सादे लोगों को भड़का सकता था। तो ऐसी थी उनकी लेखनी की ताकत।

फिल्म कोना

गोपी गवैया बाघा बजैया
(गुपी गाइन बाघा बाइन)

सत्यजित राय

प्यारे दोस्तो,

'कोंपल' में हम हर बार बच्चों की किसी प्रसिद्ध फिल्म के बारे में तुम्हें बताते हैं। इस बार हम एक बहुत ही मज़ेदार फिल्म के बारे में बताने जा रहे हैं जिसका नाम है 'गुपी गाइन बाघा बाइन' यानी 'गोपी गवैया बाघा बजैया'। महान फिल्मकार सत्यजित राय का नाम तो तुमने सुना ही होगा। 'पाथेर पांचाली', 'अपूर संसार', 'अपराजिता', 'जलसाघर', 'महानगर' जैसी बहुत सी प्रसिद्ध फिल्में बनाने वाले सत्यजित राय को दुनिया के सबसे बड़े फिल्मकारों में गिना जाता है। लेकिन उन्होंने बच्चों के लिए भी बहुत सी मज़ेदार फिल्में बनायी हैं और ढेर सारी दिलचस्प कहानियाँ भी लिखी हैं। 'गुपी गाइन बाघा बाइन' है तो बंगला में लेकिन यह भाज़ा न जानने पर भी तुम्हें इसमें बहुत मज़ा आयेगा ये बात मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ। जब भी तुम्हें मौका मिले इसे देखना ज़रूर।

चलो, सबसे पहले मैं फिल्म की कहानी ही बता देता हूँ। बंगला में बच्चों के लिए लिखने वाले एक बहुत प्रसिद्ध लेखक हुए हैं उपेन्द्रकिशोर राय चौधरी। यह फिल्म उन्हीं की कहानी पर बनी है। वह सत्यजित राय के दादा भी थे।

एक गाँव में गोपी काइन नाम का एक लड़का रहता था। उसके पिता का नाम कानू काइन था जो छोटी सी दुकान चलाता था। गाँव में किसी को गाना नहीं आता था मगर गोपी को एक गाना गाना आता था, इसलिए लोगों ने उसका नाम गोपी गाइन (यानी गवैया) रख दिया था। गोपी को सिर्फ एक ही गाना आता था लेकिन वह उसे हरदम गाता रहता था। बिना गाये उसे घुटन होने लगती थी। और गाता तो वह ऐसा था कि जब वह घर में गाता था तो सारे खरीदार दुकान से सामान खरीदना छोड़कर भाग जाते थे। जब वह बाहर खेतों में गाना शुरू करता था तो

गायें अपनी रस्सी तुड़ाकर भाग खड़ी होती थीं। एक दिन ऐसा आया कि लोगों ने डर के मारे उसके पिता की दुकान पर आना बन्द कर दिया, चरवाहों ने अपनी गायों को लेकर खेतों में जाना छोड़ दिया। फिर एक दिन, कानू काइन ने बाँस की मोटी लाठी उठाई और गोपी को मारने दौड़ा। गोपी भागकर खेतों की ओर गया मगर चरवाहों ने वहाँ से भी उसे खदेड़ दिया। गोपी जाकर जंगल में छिप गया और जीजान से गाने के अभ्यास में जुट गया।

गोपी के बगल के गाँव में पाँचू पाइन नाम का आदमी रहता था। पांचू के लड़के को ढोलक बजाने का बहुत शौक था। जब वह ढोलक बजाता था तो उसका सिर ऐसे ऊपर-नीचे होता था जैसे वह ऊँघ रहा हो, उसकी टाँगें हिलती थीं, आँखें गोल-गोल घूमने लगती थीं और वह तरह-तरह मुँह बनाता था। गाँव वाले उसके हाव-भाव को चकित होकर देखते थे और ''अहा! आआ!! ओ-हो-हो!!'' जैसी आवाजें निकालते रहते थे। अन्त में वह बोलता था ''हुं-हुं-हुं!'' और बाघ की तरह गुर्राता था। बेचारे गाँव वाले घबराकर ज़मीन पर लेट जाते थे। इसीलिए उसका नाम बाघा बाइन (बजैया) पड़ गया था।

बाघा रोज बजा-बजाकर एक ढोलक तोड़ देता था। आखिरकार पांचू ने कह दिया कि अब वह ढोलक के लिए पैसे नहीं दे सकता। तब गाँव वालों ने पांचू से कहा कि हमारे बीच में इतना बड़ा कलाकार है, हम उसके लिए चन्दा जुटाकर ढोलक खरीदेंगे ताकि वह बजाना बन्द न करे। उन्होंने उसे एक एक बहुत बड़ा ढोलक बनवाकर दिया जिस पर भैंस का मोटे चमड़ा मढ़ा हुआ था, जो फट ही नहीं सकता था। बाघा इतना खुश हुआ कि दिनो-रात उसे बजाने लगा।

गोपी गवैया बाघा बजैया का पोस्टर चित्र

''धम-धमा-धम धम-धमा-धम-धम!'' तंग आकर एक दिन गाँव वाले मोटी-मोटी लाठियाँ लेकर उसके पास गये और बोले ''प्यारे बाघा, हम तुम्हें दस टोकरे भरके मिठाइयाँ दे रहे हैं, कहीं दूर जाकर अपना ढोल बजाओ वरना हम सब पागल हो जायेंगे।'' बाघा को गाँव छोड़कर जाना पड़ा। वह जहाँ-जहाँ भी जाता उसकी ढोलक से तंग आकर लोग लाठी लेकर उसे दौड़ा लेते। आखिरकार वह भी जंगल में चला आया। वहाँ वह जी भर ढोल पीट सकता था।

एक दिन बाघा को दूर से एक खतरनाक जानवर की आवाज़ सुनाई दी। बाघा डर गया। उसे लगा कि यह कोई बाघ है जो एक ही बार

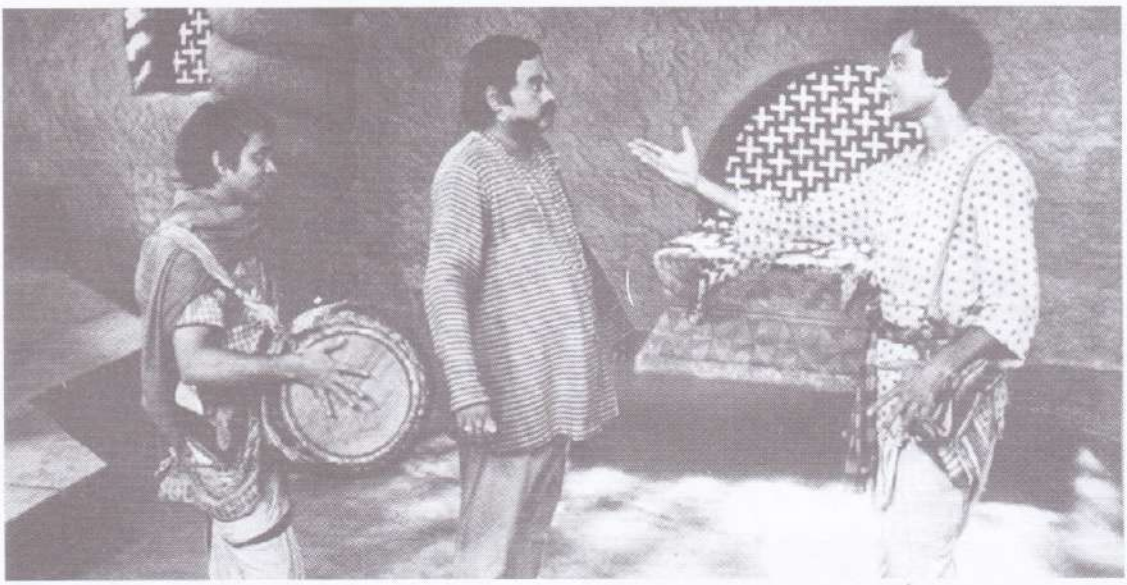

हल्ला देश के मंत्री के साथ गोपी और बाघा

में ढोलक समेत उसको निगल जायेगा। दरअसल, वह जानवर और कोई नहीं बल्कि गोपी था जिसके गाने की आवाज सुनकर बाघा काँप उठा था। उधर गोपी भी बाघा के ढोल की आवाज से डरा हुआ था। एक दिन दोनों की मुलाकात हो गयी। तब उन्हें पता चला कि वे तो एक-दूसरे के गाने-बजाने से डर रहे थे। दोनों खूब हँसे। फिर उन्होंने तय किया कि गाँव वाले सब मूर्ख हैं और कला की कद्र करना नहीं जानते। अब वे दोनों मिलकर गायेंगे और बजायेंगे। उन्होंने सोचा कि जाकर राजा को अपना संगीत सुनायेंगे।

रास्ते में एक चौड़ी नदी थी जिसे नाव से पार करना पड़ता था। उनके पास पैसे तो थे नहीं, सो उन्होंने नाव वाले से कहा कि अगर वह उन्हें उस पार पहुँचा दे तो वे नाव के यात्रियों को मुफ़्त में संगीत सुनायेंगे। आधे रास्ते पहुँचने के बाद जैसे ही गोपी ने गाने की टेर लगायी और बाघा ने ढोल पीटना शुरू किया, सारे मुसाफिर घबराकर एक-दूसरे से चिपटने लगे। इतना कोलाहल मचा कि नाव पलट गयी और सारे लोग पानी में गिर पड़े। बाघा के बड़े-से ढोल के सहारे दोनों डूबे तो नहीं लेकिन नदी पार करके राजमहल में जाने के बजाय वे बहते-बहते दूर एक जंगल के किनारे पहुँच गये। जंगल में घुप अँधेरा था। अपना डर भगाने के लिए दोनों गाने और बजाने लगे। बाघा का ढोल गीला था इसलिए उसकी आवाज़ पहले जैसी कानफाड़ू नहीं रह गयी थी। और गोपी को लग रहा था कि ये उसके जीवन का आखिरी गाना है, इसलिए उसकी आवाज भी अब कानफोड़ू नहीं थी। वे गाते और बजाते रहे, पहले एक घंटा बीता, फिर दो और फिर आधी रात हो गयी।

तभी उन्हें लगा कि कुछ अजीब सी बात हो रही है। विशालकाय काली-काली छायाएँ पेड़ों के ऊपर से उन्हें देख रही हैं। उनकी आँखें जलते कोयलों की तरह चमक रही थीं और

उनके बड़े-बड़े दाँत ऐसे चमक रहे थे जैसे ढेर सारी मूलियाँ कतार में रखी हों। डर के मारे दोनों इतनी जोर से काँप रहे थे कि भाग भी नहीं पा रहे थे। लेकिन भूतों ने उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाया। उन्हें गोपी और बाघा का संगीत इतना पसंद आया था कि वे उन्हें भूतों के राजकुमार की शादी में बजाने का न्यौता देने आये थे। नकियाती आवाज़ में एक भूत ने पूछा : ''अरें प्यारें, गांना क्यूं रोंक दियां? गांओं, गांओं, बंजांओं, बंजांओं!''

अब गोपी और बाघा का डर कुछ कम हुआ। उन्होंने सोचा, ''चलो बजाते हैं, जो होगा देखा जायेगा।'' जैसे ही उनका गाना शुरू हुआ, सारे भूत एक-एक करके नीचे उतर आये और उनको घेरकर नाचने लगे। गोपी और बाघा ने ऐसा अद्‌भुत दृश्य कभी नहीं देखा था। उनको अपनी कला के ऐसे कद्रदान भी कभी नहीं मिले थे। रात भर नाच-गाना चलता रहा। पौ फटने के बाद भूत खुले में नहीं रह सकते थे। मगर चलते-चलते भूत राजा बोला : ''तुम क्या चाहते हो? जो चाहे माँग लो।'' गोपी बोला, ''हम लोगों को अपने संगीत से खुश करना चाहते हैं।''

भूत राजा बोला, ''ठीक है, जब लोग तुम्हारा गाना सुनेंगे तो वे मंत्रमुग्ध हो जायेंगे और अपनी जगह से हिल ही नहीं पायेंगे।'' उसने यह भी कहा कि जब भी तुम्हें भूख लगे या कपड़े चाहिए

शुंडी का राजा

बस ताली बजाना और वह तुम्हें मिल जायेगा। भूतों ने उन्हें दो जोड़ी जूते दिये। उन्हें पहनकर वह पल भर में कहीं भी पहुँच सकते थे।

भूतों के जाते ही गोपी और बाघा ने सोचा, ''अब हम राजमहल जाना चाहते हैं।'' अचानक घना जंगल गायब हो गया और वे राजमहल के फाटक पर खड़े थे।

दरवाजे पर यमदूतों की तरह दो पहरेदार खड़े थे। उन्होंने गोपी-बाघा को भगाने के लिए

बाघा का ढोलक और गोपी की तान

गोपी और बाघा

लाठी उठायी ही थी कि गोपी ने नाक उठाकर कहा, ''हम तो राजा से मिलकर रहेंगे।'' इतना कहते ही दोनों राजा के पास पहुँच गये। राजा महल के भीतरी कमरे में सो रहा था और रानी पंखा झल रही थी। अचानक गोपी और बाघा अपने विशालकाय ढोलक के साथ कमरे में प्रकट हो गये। उन्हें देखकर रानी जोर से चिल्लाई और बेहोश होकर गिर गयी। राजा बिस्तर से कूदकर पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ने लगा। सिपाही और पहरेदार भी तलवारें लेकर भागे आये। गोपी और बाघा को बस इतना कहने की जरूरत थी कि वह कहीं और जाना चाहते हैं। लेकिन घबराहट में वह सबकुछ भूल गये और पैदल भागने लगे मगर पकड़े गये। उनकी जमकर पिटाई हुई। लात-घूँसे, लाठी-डंडा, कोड़े-चाबुक, कान खिंचाई, कुछ भी बाकी न रहा। दोनों को पकड़कर कालकोठरी में डाल दिया गया और बाघा की ढोलक भी जब्त हो गयी। तब जाकर उन्हें भूतों की दी हुई जादुई शक्तियों का ध्यान आया। एक बार ताली बजाजे ही उनके झोले से बढ़िया खाना निकल आया। फिर उन्होंने राजाओं वाले बढ़िया कपड़े माँगे और अपने जादुई जूतों की मदद से पलक झपकते शुंडी देश के महल के बाहर पहुँच गये। इस बार उनको आते देखकर पहरेदारों को लगा कि कोई राजकुमार आ रहे हैं। उन्हें ले जाकर दरबार में बैठाया गया।

शुंडी का राजा अच्छा था और उसने उन्हें अपने यहाँ होने वाली संगीत प्रतियोगिता में भाग लेने की इजाजत दे दी। प्रतियोगिता में गोपी और बाघा ने अपने संगीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया और ईनाम जीत लिया। राजा ने खुश होकर उन्हें राजसी संगीतकार नियुक्त कर दिया।

इसी बीच हल्ला देश का राजा, जो शुंडी के राजा का जुड़वाँ भाई था, शुंडी पर हमला करने

की तैयारी कर रहा था। हल्ला के राजा को उसके लालची प्रधानमंत्री ने जादूगर बर्फी की मदद से बहका रखा था। प्रधानमंत्री दोनों देशों की लड़ाई करवाकर खुद राजा बनना चाहता था। गोपी और बाघा को पता चला तो वे हल्ला देश में पहुँच गये और अपनी करिश्माई ताकतों के जरिये तरह-तरह के मजेदार कारनामों से लड़ाई को रुकवाने में कामयाब हो गये। अन्त में दोनों राजा मिल जाते हैं और गोपी और बाघा को अपने परिवार का हिस्सा बना लेते हैं।

'गुपी गाइन बाघा बाइन' 7 से लेकर 70 साल तक, हर उम्र के बच्चों के लिए हँसी और हुड़दंग से भरी बेहद मज़ेदार फिल्म है। बंगाल में रिलीज होने के बाद यह इक्यावन हफ्ते तक लगातार चलती रही थी। सत्यजित राय ने खुद इसके बारे में लिखा था कि कोलकाता शहर में शायद ही कोई बच्चा हो जो इस फिल्म के गीतों को गाता न रहता हो। वाकई, इस फिल्म का संगीत इतना मजेदार है कि भाषा न जानने पर भी तुम इसे गुनगुनाने लगोगे। सत्यजित राय ने खुद ही इसका संगीत भी तैयार किया था।

फिल्म की कहानी तो मजेदार है ही, लेकिन उससे भी दिलचस्प है सत्यजित राय द्वारा उसे पेश करने का तरीका। फिल्म में जंगल में भूतों के नाच का करीब 6 1/2 मिनट लम्बा एक अद्‌भुत दृश्य है। इसका संगीत और पर्दे पर दिखने वाला नाच इतना मज़ेदार है कि तुम बार-बार उसे देखना चाहोगे। कई और दृश्य भी हँसी-हँसी में बहुत कुछ कह जाते हैं। जैसे एक दृश्य में हल्ला देश का एक जासूस शुंडी से लौटकर वहाँ के बारे में प्रधानमंत्री को रिपोर्ट दे रहा है। जासूस को देखकर ही लगता है कि उसे कई दिन से ठीक से खाना भी नहीं मिला है। जासूस शुंडी की रिपोर्ट देते-देते वहाँ के हरे-भरे खेतों और फलों से लदे पेड़ों के बारे में बताना शुरू कर देता है और लगता है उसके मुँह में पानी आ रहा है। उधर प्रधानमंत्री उसको डाँटकर चुप कराता है जबकि वह खुद पकवानों से भरे थाल से तर माल उड़ा रहा होता है। इसी तरह शुंडी में राजा के परिवार के अलावा बाकी सभी लोग किसी बीमारी की वजह से गूँगे हो गये हैं। हल्ला का प्रधानमंत्री जादूगर बर्फी से ऐसी दवा बनाने के लिए कहता है जिससे वे फिर से बोलने लगें। बर्फी इसकी वजह पूछता है तो प्रधानमंत्री कहता है अगर लोग कुछ माँग ही नहीं पायेंगे तो मैं उन्हें देने से मना कैसे कर पाऊँगा!

यह फिल्म बेहद दिलचस्प और कल्पनाशील ढंग से संगीत की ताकत, दोस्ती, बेवजह देशों के बीच होने वाले युद्ध जैसी बातों को हमारे सामने रखती है। यह हमें पंखवाले कल्पना के घोड़ों पर सवार होकर दूर-दूर तक उड़ान भरने के लिए प्रेरित करती है। यह अच्छाई और बुराई, सच और झूठ, निश्छलता और पाखंड में फर्क करना सिखाती है, वह भी इस तरह कि हमें पता भी नहीं चलता। हम तो बस गोपी और बाघा के साथ-साथ उनके एक से एक हैरतअंगेज़ और मस्तीभरे कारनामों में शामिल होते चले जाते हैं।

इस फिल्म को दुनिया के कई दशों में पुरस्कार भी मिले। बाद में सत्यजित राय ने 'हीरक राजार दशे' (हीरों के राजा के देश में) नाम से इसकी अगली कड़ी भी बनायी। उनके निधन के बाद उनके बेटे सन्दीप राय ने 'गुपी बाघा फिरे एलो' (गोपी और बाघा फिर आ गये) नाम से एक और फिल्म बनायी लेकिन 'गुपी गाइन बाघा बाइन' का जादू अब भी बरकरार है।

– सत्तू प्रसाद

कार्टून

"ठहरो, ठहरो एक घड़ी को, ओ चूहे सुकुमार –
तुमपर वार करूंगी मैं तो, अब होकर तैयार !"
"ऐसी भी क्या जल्दी है, ओ मेरी बिल्ली रानी !
होने दो कुछ मोटा मुझको, खा रोटी, पी कर पानी।"
तश्तरियों-सी आंखे देखीं, औ' पालों से कान।

चित्र कैसे बनायें

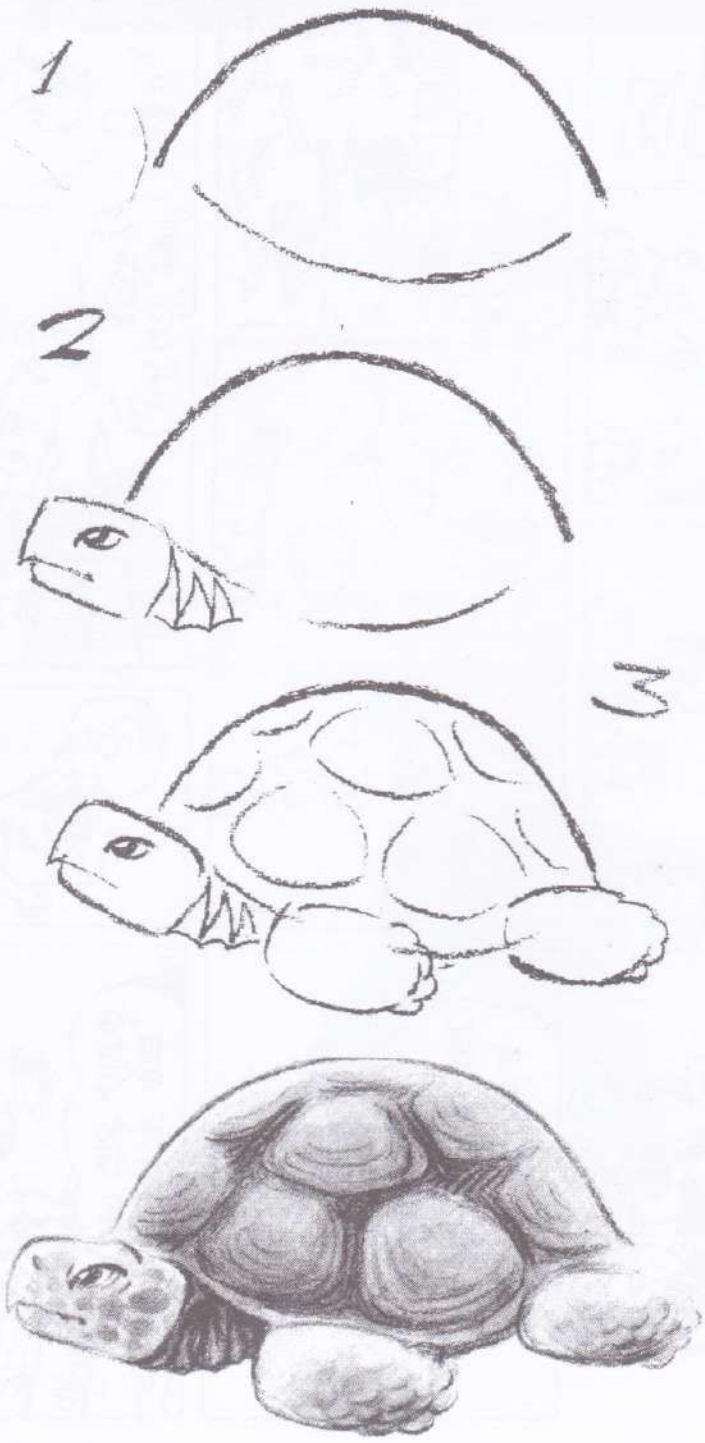

कोंपल

चित्र कथा

गोलू
गोलू इन गर्मियों की छुट्टी में मैं फोटोग्राफी सीख रहा हूं
वन्य जीवों की पूरी सीरीज बना रहा हूं
मुझे वन्य जीवों के साथ चित्र खिंचवाना अच्छा लगता है
क्या मेरी एक फोटो वन्य जीवों के साथ खींच दोगे
हां हां क्यों नहीं? प्राणि उद्यान चलते हैं
घड़ियाल
घड़ियाल
इस हिरन के साथ मेरा फोटो खींच दो
?
घड़ियाल
तुम क्यों भाग रहे हो..?

बालकूची ...ईशिप्त

Title Code UPHIN44502/24-10-2013

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

अनुराग ट्रस्ट

सोमवार से शनिवार, 12 से 8 बजे तक
डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

सच से बड़ा सच	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
गुड़ की डली	कात्यायनी	20.00
धरती और आकाश	अ. वोल्कोव	120.00
नीला प्याला	अरकादी गैदार	40.00
गड़रिये की कहानियाँ	क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
चींटी और अन्तरिक्ष यात्री	अ. मित्यायेव	35.00
अन्धविश्वासी शेकी टेल	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
चलता-फिरता हैट	एन.नोसोव, होल्गर पुक्क	20.00
गधा और ऊदबिलाव	मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
गुफा मानवों की कहानियाँ	मैरी मार्स	20.00
हम सूरज को देख सकते हैं	मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
मुसीबत का साथी	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
आकाश में मौज-मस्ती	चिनुआ अचेबे	20.00
आश्चर्यलोक में एलिस	सर्वान्तेस	30.00
जिन्दगी से प्यार	जैक लण्डन	30.00
अजीबोगरीब किस्से	होल्गर पुक्क	15.00
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई (नाटक)	वृन्दावनलाल वर्मा	30.00
गुल्ली-डण्डा	प्रेमचन्द	20.00
रामलीला	प्रेमचन्द	20.00
लॉटरी	प्रेमचन्द	20.00
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
पोस्टमास्टर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
मनमानी के मजे	सेर्गेई मिखालोव	20.00
आम जिन्दगी के मजेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्क	15.00
नये जमाने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्क	15.00
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे	सुन यओच्युन	40.00
गोलू के कारनामे	रामबाबू	15.00

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक – जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

जनचेतना, 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001

अनुराग ट्रस्ट की सभी पुस्तकों की सूची के लिए इस वेबसाइट पर जाएँ : janchetnabooks.org